



भाजपा की नई कार्यकारिणी

मिशन 2029 की रणनीति तैयार, टीम में 3 पूर्व सीएम, 18 सांसद

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों की नई टीम का एलान हो गया है। नितिन नवीन की अध्यक्षता वाली पार्टी ने सोमवार को कुल 65 सदस्यीय नई टीम का एलान किया। नए पदाधिकारियों में कई चौकाने वाले बदलाव हुए हैं। जहां लंबे समय से भाजपा के आईटी सेल के अध्यक्ष पद से अमित मालवीय को हटाकर दीपक म्हस्के को लाया गया है, वहीं युवा मोर्चा टीम के प्रमुख पद से तेजस्वी सूर्या को विदाई हुई है और अब उनकी जगह हेमांग जोशी को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के स्तर पर?: राष्ट्रीय उपाध्यक्षों की नई सूची में पार्टी ने क्षेत्रीय संतुलन और अनुभव का समन्वय करने की कोशिश की है। भाजपा ने इस बार कुल 13 उपाध्यक्ष घोषित किए हैं। अगर पहले और अब के पदाधिकारियों के हिसाब से विश्लेषण किया जाए तो सामने आता है कि 12 पुराने उपाध्यक्षों में से केवल

चार को बरकरार रखा गया है, जबकि नौ नए चेहरों को शामिल किया गया है।

संगठनात्मक बदलाव का विश्लेषण: पुरानी सूची से सरोज पांडे, डीके. अरुणा, एम. चूबा आओ, अब्दुल्ला कुट्टी, लक्ष्मीकांत बाजपेई और लता उसेंडी को हटा दिया गया है। सौदान सिंह को उपाध्यक्ष पद से स्थानांतरित कर राष्ट्रीय सह-महामंत्री (संगठन) बनाया गया है।

वरिष्ठ पत्रकार राकेश शुक्ल ने अमर उजाला से बातचीत में बताया कि भाजपा की यह नीति रही है कि उपाध्यक्ष और महामंत्री जैसे वरिष्ठ पदों पर मझे हुए और अनुभवी चेहरे रखे जाते हैं। उसने यह परंपरा पहले की तरह ही बरकरार रखी है। वसुंधरा राजे के उपाध्यक्ष बने रहने पर उन्होंने कहा कि राजस्थान की राजनीति से सिंधिया को अलग नहीं किया जा सकता। भाजपा ने भजन लाल जी को मुख्यमंत्री बनाने का प्रयोग किया,



रूप कुमारी चौधरी बनीं महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष

नई दिल्ली/महासमुंद। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने पार्टी की नई राष्ट्रीय टीम की घोषणा करते हुए कई नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी हैं। नई नियुक्तियों में छत्तीसगढ़ को भी राष्ट्रीय संगठन में बड़ी जिम्मेदारी मिली है। महासमुंद की सांसद रूप कुमारी चौधरी को भाजपा महिला मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है। वहीं दीपक मडस्के को राष्ट्रीय सोशल मीडिया संयोजक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पार्टी की ओर से जारी नई नियुक्तियां तत्काल प्रभाव से लागू होंगी। राष्ट्रीय संगठन में रूप कुमारी चौधरी को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलने से छत्तीसगढ़ भाजपा में उत्साह का माहौल है।

लेकिन पिछले तीन वर्ष में बतौर मुख्यमंत्री वे बहुत प्रभावी नहीं रहे। आज भी वसुंधरा राजे राजस्थान में मजबूत करने की कोशिश की है। मजबूत हैं। ऐसे में उनके समर्थकों में नाराजगी न फैले, इसलिए भाजपा ने उन्हें राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर बनाए

रखा।पार्टी ने संगठनात्मक पदों पर अपनी कोर टीम को और अधिक मजबूत करने की कोशिश की है। राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) के पद पर बी.एल. संतोष को बरकरार रखा गया है। राष्ट्रीय सह-महामंत्री

(संगठन)= शिवप्रकाश पद पर बरकरार हैं। इसके अलावा सौदान सिंह को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष से हटा कर अब राष्ट्रीय सह-महामंत्री (संगठन) की भूमिका सौंपी गई है। पूर्व राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ को अब राष्ट्रीय कार्यालय प्रभारी की नई भूमिका में स्थानांतरित किया गया है, जो संगठन के आंतरिक प्रबंधन के लिए अहम बताई गई है।

दूसरी ओर राष्ट्रीय महासचिव के तौर पर स्मृति ईरानी को लाने पर राकेश शुक्ल ने बताया कि उनके पास महिला मोर्चा अध्यक्ष और पूर्व पदाधिकारी के रूप में काम करने का बेहतरीन अनुभव है, साथ ही उन्हें सरकारी कामकाज का भी लंबा अनुभव है। भाजपा को संगठन में एक तेजतर्रार महिला चेहरे की जरूरत थी, इसलिए उन्हें फिर से मुख्यधारा की राजनीति में लाया गया है।राष्ट्रीय सचिव स्तर पर बड़े बदलाव: राष्ट्रीय सचिवों के वर्ग में भाजपा ने लगभग पूरी तरह संगठन में बदलाव किया है। इस बार कुल 16 राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किए गए हैं, जिनकी पहले संख्या 11 थी।

संगठन और जनसेवा पर दें ध्यान: पीएम मोदी



भाजपा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के नेतृत्व में बड़े संगठनात्मक बदलावों की घोषणा की, जिसमें नए राष्ट्रीय पदाधिकारियों की नियुक्ति शामिल है। इस नई टीम में 13 राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पीयूष गोयल राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष और स्मृति ईरानी व बिप्लव कुमार देब जैसे नेता राष्ट्रीय महासचिवों के रूप में शामिल किए गए हैं, जो पार्टी को नई गति प्रदान करेंगे।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को भारतीय जनता पार्टी के नए नियुक्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों को बधाई दी और भरोसा जताया कि नई टीम संगठन को मजबूत करेगी और जनसेवा पर ध्यान देगी। झू पर एक पोस्ट में प्रधानमंत्री मोदी ने लिखा कि भाजपा के नए नियुक्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों और पार्टी में अलग-अलग जिम्मेदारियों पाने वाले सभी लोगों को बधाई। यह नई टीम संगठनात्मक अनुभव, ऊर्जा और ज़मीनी स्तर पर लोगों से जुड़ाव का संगम है। मुझे भरोसा है कि वे हमारी पार्टी को मजबूत करने और जनसेवा पर ध्यान देने में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देंगे। उन्होंने मेरी शुभकामनाएँ।भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय टीम में नव-नियुक्त सभी पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। अनुभव और ऊर्जा के मेल से बनी यह टीम, माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में संगठन को नई गति प्रदान करेगी। मुझे विश्वास है कि प्रत्येक सदस्य, एक समर्पित कार्यकर्ता की भावना के साथ, विकसित भारत के संकल्प और राष्ट्र-निर्माण की प्रतिबद्धता को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए संगठन को और मजबूत करेगा।बीजेपी ने सोमवार को पार्टी प्रमुख नितिन नवीन के नेतृत्व में संगठन में बड़े बदलाव की घोषणा की। इसके तहत नए राष्ट्रीय पदाधिकारियों की नियुक्ति की गई और कई नेताओं को अहम जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं। ये नियुक्तियाँ तुरंत प्रभाव से लागू होंगी। पार्टी ने 13 राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त किए हैं, जिनमें राम माधव, राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, बैजयंत जय पांडा, लोकसभा सांसद डी. पुरंदेश्वरी, रेखा वर्मा, भारती पवार, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तीर्थ सिंह रावत और मनप्रती सिंह बादल शामिल हैं। इस बीच, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को बीजेपी का राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

आईएसआई समर्थित शहजाद भट्टी का नेटवर्क ध्वस्त, 200 से ज्यादा गिरफ्तार

नईदिल्ली।स्वतंत्रता दिवस से पहले आईएसआई समर्थित आतंकी गुट शहजाद भट्टी नेटवर्क के नेटवर्क पर बड़ी कार्रवाई की गई। गृह मंत्री अमित शाह के मुताबिक देशभर के 14 राज्यों में चलाए गए अभियान के तहत 253 लोगों को हिरासत में लिया गया।इस नेटवर्क के खिलाफ अब तक 80 मामले दर्ज किए जा चुके हैं। साथ ही 200 से ज्यादा गिरफ्तारी हुई है। यह कार्रवाई प्रधानमंत्री की सीमा-पार आतंकवाद के खिलाफ केंद्र की ज़िरे टॉलरेंस की नीति के तहत की गई।



समर्थित आतंकी गुट शहजाद भट्टी नेटवर्क को खत्म कर दिया और 200 से ज्यादा आतंकीयों को गिरफ्तार करके उसके खतरनाक हमलों के मंसूबों को नाकाम कर दिया।

भारतीय सुरक्षा बलों ने 14 राज्यों में

मंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा, स्वतंत्रता दिवस से पहले आईएसआई के पास से भारी मात्रा में सामान बरामद किया गया, जिसमें द्हुश्रष्ट, पाकिस्तान ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के निशान वाले ग्रेनेड, पिस्तौल, जिंदा कारतूस और जासूसी के लिए इस्तेमाल होने वाले सीसीटीवी कैमरे शामिल थे। यह नेटवर्क कई आतंकी गतिविधियों में शामिल था।

अलग-अलग जगहों पर एक साथ ऑपरेशन चलाकर इस नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया, जो आतंकवाद के प्रति भारत की ज़िरी-टॉलरेंस नीति का एक बेहतरीन उदाहरण है।

गृह मंत्री ने आगे लिखा, आईएसआई से फंड पाने वाले इस गुट के पास से भारी मात्रा में सामान बरामद किया गया, जिसमें द्हुश्रष्ट, पाकिस्तान ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के निशान वाले ग्रेनेड, पिस्तौल, जिंदा कारतूस और जासूसी के लिए इस्तेमाल होने वाले सीसीटीवी कैमरे शामिल थे। यह नेटवर्क कई आतंकी गतिविधियों में शामिल था।

सीएम साय ने सावन सोमवार और नागपंचमी पर श्री फलेश्वरनाथ महादेव की पूजा-अर्चना की

रायपुर। सावन मास की पुण्य बेला और नागपंचमी के पावन अवसर पर आज मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपनी धर्मबन्धी कौशल्या साय एवं परिवार के सदस्यों के साथ गुहग्राम बगिया स्थित श्री फलेश्वरनाथ महादेव मंदिर पहुंचकर भगवान भोलेनाथ की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री ने भगवान शिव का अभिषेक कर प्रदेशवासियों के सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली के साथ छत्तीसगढ़ की रिनंतर प्रगति की मंगलकामना की। मैनी नदी के सुख्य तट पर स्थित श्री फलेश्वरनाथ महादेव मंदिर में 17 से 19 अगस्त तक एक लाख 11 हजार 111 पार्थिव शिवलिंग के निर्माण एवं पूजन का तीन दिवसीय विशेष धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री साय एवं कौशल्या साय ने श्रद्धालुओं के साथ अपने हाथों से पार्थिव शिवलिंग का निर्माण किया और विधि-विधान से पूजन एवं अभिषेक किया। वैदिक मंत्रोच्चार और हर-हर महादेव के जयघोष से पूरा मंदिर परिसर शिवमय हो उठा।



पी. चिदंबरम शुद्ध नक्सली कार्यकाल की जांच की मांग

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने इस बात की जांच की मांग की है कि क्या पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री पी. चिदंबरम ने अपने कार्यकाल के दौरान नक्सलवाद के खिलाफ जानबूझकर कोई ठोस कदम नहीं उठाया। यह टिप्पणी 17 अगस्त को चिदंबरम के उस सोशल



मीडिया पोस्ट के बाद की गई, जिसमें उन्होंने खुद को दिमागी नक्सल बताया था। गुवाहाटी में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए सरमा ने चिदंबरम के खुद को दिए गए इस नाम की आलोचना करते हुए कहा कि पी चिदंबरम दिमागी नक्सल नहीं, बल्कि पूरी तरह से नक्सल हैं। अब जब देश के गृह मंत्री रहे पी. चिदंबरम ने खुद को दिमागी नक्सल कहा है, तो इस बात की जांच होनी चाहिए कि क्या उन्होंने देश के गृह मंत्री के तौर पर अपने कार्यकाल के दौरान नक्सलवाद को खत्म करने के लिए जानबूझकर कोई कार्रवाई नहीं की थी। उन्होंने कहा कि हालांकि ग्रामीण इलाकों के जंगलों में हथियारबंद नक्सलवाद को काफी हद तक खत्म कर दिया गया है, लेकिन वैचारिक नक्सलवाद-जिसे दिमागी नक्सल कहा जाता है—

भाजपा ने कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम पर साधा निशाना

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिमागी नक्सल वाले बयान पर राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गई है। बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम पर पलटवार किया है। त्रिवेदी ने चिदंबरम के उस बयान पर सवाल उठाए, जिसमें उन्होंने कहा था कि उन्हें दिमागी नक्सल होने



पर गर्व है। बीजेपी नेता ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के 2006 के उस बयान का जिक्र किया जिसमें उन्होंने नक्सलवाद को देश की सबसे बड़ी आंतरिक सुरक्षा चुनौती बताया था।बीजेपी की प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि पार्टी को हैरानी है कि चिदंबरम ने मोदी के स्वतंत्रता दिवस वाले बयान पर 24 घंटे के अंदर ही जवाब दे दिया। त्रिवेदी ने कहा कि चिदंबरम ने असल में मोदी के इस्तेमाल किए गए शब्द से खुद को जोड़ लिया है। उन्होंने कांग्रेस से साफ करने को कहा कि वह पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नक्सलवाद पर किए गए आकलन को सही मानती है या चिदंबरम के हालिया रुख को।

आय से अधिक संपत्ति मामले में राहुल को सुको से राहत

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय से कहा कि वह कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति के मामले में कार्यवाही आगे न बढ़ाए। सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई और एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट (ईडी) को यह भी निर्देश दिया कि वे लोकसभा में विपक्ष के नेता गांधी के



खिलाफ मामले के संबंध में हाई कोर्ट के सामने कोई रिपोर्ट पेश न करें। चीफ जस्टिस सुर्य कांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची और बी. मोहना की बेंच ने गांधी की ओर से पेश सीनियर वकील कपिल सिबल की दलीलों पर गौर किया और कर्नाटक के रहने वाले एस. विग्नेश शिशिर (जिन्होंने हाई कोर्ट का रुख किया था) के साथ-साथ सीबीआई और ईडी को भी नोटिस जारी किए। यह बेंच इस मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली गांधी की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह इस मामले की जांच करना चाहता है क्योंकि एक अदालत ने निर्देश जारी किए थे।

वंदे मातरम विवाद में राहुल व सोनिया पर अपमान का आरोप

नईदिल्ली। दिल्ली पुलिस ने एक शिकायत के आधार पर जांच शुरू कर दी है। इस शिकायत में कांग्रेस के सीनियर नेताओं सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की गई है। आरोप है कि स्वतंत्रता दिवस पर ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी हैडक्वार्टर में वंदे मातरम गाए



जाने के दौरान उन्होंने बाधा डाली थी। यह शिकायत 15 अगस्त को नई दिल्ली स्थित कांग्रेस हैडक्वार्टर में हुए स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम से जुड़ी है। शिकायत के मुताबिक, सोनिया गांधी ने कथित तौर पर ऐसे इशारे किए और वहां मौजूद लोगों से इस तरह बात की, जिसे शिकायत करने वाले ने राष्ट्रीय गीत को जारी रखने का विरोध माना। इसमें यह भी आरोप लगाया गया है कि राहुल गांधी को यह कहते हुए सुना गया, हम वंदे मातरम नहीं गा रहे हैं। ये दावे शिकायत का हिस्सा हैं और पुलिस ने इनकी पुष्टि नहीं की है। दिल्ली पुलिस अभी इस शिकायत की जांच कर रही है ताकि कथित तौर पर हुई बाधा के पीछे के हालात का पता लगाया जा सके। यह शिकायत घटना के अगले दिन, यानी 16 अगस्त को दर्ज कराई गई थी।

प्रशांत किशोर ने बिहार विधानसभा में ली शपथ

पटना। जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने सोमवार को बिहार विधानसभा में स्पीकर प्रेम कुमार की मौजूदगी में बांकीपुर विधायक के तौर पर शपथ ली। शपथ लेने के बाद पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि जिस सदन में कृष्ण सिन्हा, कर्पूरी ठाकुर, अनुग्रह नारायण सिन्हा,



नीतीश कुमार, लालू प्रसाद यादव, केदार पांडे, राम विलास पासवान और सुशील कुमार मोदी जैसे लोगों ने सेवा की है, उसका सदस्य बनना मेरे लिए गर्व की बात है। प्रशांत किशोर ने कहा कि समाज और राज्य की बेहतरी के लिए अपनी जिंदगी के कीमती साल समर्पित करने वाले सैकड़ों विधायकों की तरह काम करना उनके लिए एक बड़ी जिम्मेदारी भी है। किशोर ने 3 अगस्त को ऐतिहासिक चुनावी शुरुआत की; उन्होंने बिहार के प्रतिष्ठित बांकीपुर विधानसभा क्षेत्र का उपचुनाव जीता और भाजपा को बड़ा झटका दिया, जिसके पास तीन दशकों से यह सीट थी। उन्होंने 64,151 वोट हासिल करके भाजपा के नीरज कुमार को 19,324 वोटों के अंतर से हराया। कुमार को 44,827 वोट मिले।

ललित गर्ग

संसदीय मर्यादाओं का क्षरण कब तक? आखिर कब हम संसद के एक-एक मिनट का उपयोग करने की पात्रता विकसित करेंगे? आजादी की 80वीं वर्षगांठ की आयोजना से पूर्व भारत में संसद का मानसून सत्र जिस निराशाजनक स्थिति, नाउम्मीदी और उपेक्षापूर्ण स्थितियों के साथ संपन्न हुआ, वह केवल किसी एक दल, सरकार या विपक्ष की विफलता नहीं है, बल्कि हमारी संसदीय संस्कृति के सामने खड़ा एक गंभीर प्रश्नचिह्न है। 25 दिनों तक चले इस सत्र में तीखी राजनीतिक बहस के बजाय हंगामा, नारेबाजी, गतिरोध और कार्यवाही बाधित करने की प्रवृत्ति अधिक प्रभावी रही। प्रश्न यह नहीं है कि सत्ता पक्ष सही था या विपक्ष, प्रश्न यह है कि क्या हमारी संसद अपने मूल दायित्व-जनता के प्रश्नों पर गंभीर विमर्श, सरकार की जवाबदेही और राष्ट्रहित में कानून निर्माण को पूरा कर पा रही है? इस सत्र

के आंकड़े स्वयं बहुत कुछ कह रहे हैं। लोकसभा की उत्पादकता बमुरिकल 19 प्रतिशत रही, जबकि राज्यसभा में लगभग 39 प्रतिशत काम हो पाया। लोकसभा में एक भी दिन प्रश्नकाल पूरा नहीं हो सका। यह स्थिति इसलिए अधिक चिंताजनक है क्योंकि प्रश्नकाल संसद की आत्मा माना जाता है। देश की जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों को सरकार से प्रश्न पूछने और सरकार को उनका उत्तर देने का अवसर ही यदि सदन में उपलब्ध न हो, तो लोकतंत्र की जवाबदेही किस रास्ते से सुनिश्चित होगी? 28 जुलाई को लोकसभा में अपेक्षाकृत ठीक काम हुआ, जबकि राज्यसभा में भी केवल कुछ दिन ही सार्थक कार्यवाही हो सकी। शेष समय का बड़ा हिस्सा राजनीतिक टकराव की भेंट चढ़ गया।

संसद केवल ईंट-पत्थर से बनी इमारत नहीं है। वह भारत की सामूहिक चेतना का सर्वोच्च लोकातांत्रिक मंच है। वहां देश के करोड़ों नागरिकों की आकांक्षाएँ, समस्याएँ और



सपने पहुंचते हैं। किसान, मजदूर, विद्यार्थी, महिला, व्यापारी, युवा, गरीब और वंचित वर्ग-सभी की आवाज संसद के माध्यम से राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनती है। इसलिए संसद का एक मिनट भी केवल सांसद का समय नहीं होता, वह देश की जनता के धन, विश्वास और लोकतांत्रिक अधिकार का समय होता है। संसद का प्रत्येक व्यर्थ गया मिनट वास्तव में जनता के विश्वास से घटा हुआ एक मिनट है। दुर्भाग्य

यह है कि संसद में हंगामा अब अपवाद नहीं, बल्कि संसदीय राजनीति का लगभग नियमित हथियार बनता जा रहा है। मुद्दे उठाना लोकतांत्रिक अधिकार है, सरकार को घेरना विपक्ष का दायित्व है और असहमति लोकतंत्र की शक्ति है, लेकिन असहमति को संवाद में बदलने के बजाय कार्यवाही रोक देना लोकतंत्र को मजबूत नहीं करता। विरोध की बात रखने के लिए सदन को चलने ही न दे और सत्ता पक्ष विपक्ष की आवाज सुनने की बजाय राजनीतिक बहुमत को ही पर्याप्त समझे, तो दोनों मिलकर संसदीय लोकतंत्र की आत्मा को कमजोर करते हैं।इस सत्र में कुछ घटनाएँ इस गिरावट को और स्पष्ट करती हैं। लोकसभा अध्यक्ष ने सत्र के समापन पर पारंपरिक समापन भाषण नहीं दिया। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और तृणमूल कांग्रेस द्वारा लोकसभा अध्यक्ष के साथ होने वाली चाय पार्टी का बहिष्कार किया जाना भी केवल एक कार्यक्रम का बहिष्कार नहीं माना

जा सकता। यह सदन के भीतर बढ़ती राजनीतिक कटुता का संकेत है। लोकतंत्र में मतभेद स्वाभाविक हैं, मनभेद लोकतंत्र के लिए घातक हैं। संसद में बहस के बाद हाथ मिलाने की संस्कृति विकसित होनी चाहिए, बहस के बाद दूरी बढ़ाने की नहीं। इस मानसून सत्र को नीट-यूजी पेपर लीक, जंतर-मंतर छात्र आंदोलन, शिक्षा मंत्री धर्मंद प्रधान के इस्तीफे की मांग और राम मंदिर में दान चोरी जैसे मुद्दों के लिए भी याद किया जाएगा। जंतर-मंतर पर हुई हिंसा के बाद विपक्ष केंद्रीय गृहमंत्री से गुवाब मांग रहा था। जब सत्र के अंतिम दिनों में गृहमंत्री जवाब देने को तैयार हुए तो विपक्ष द्वारा उनका वक्तव्य सुनने से इनकार करना संसदीय विवेक की कसौटी पर गंभीर प्रश्न जन्मा है। यदि विपक्ष को सरकार के तत्वात्मक प्रतिवाद करना अधिक प्रभावी लोकातांत्रिक रास्ता होता। संसद में जवाब सुनने से इनकार करना प्रश्न का समाधान नहीं, प्रश्न

को अनुत्तरित छोड़ना है।

यह भी सच है कि तमाम गतिरोध के बीच संसद ने कुछ महत्वपूर्ण काम किए। विदेशी अंशदान विनियमन संशोधन विधेयक यानी एफसीआरए को सरकार ने विरोध के बीच संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजा। सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक, 2026 दोनों सदनों में पारित हुआ, जिसका उद्देश्य परीक्षाओं में अनुचित साधनों पर अंकुर लगाना और दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करना है। बैंकिंग रिकॉर्ड को नए डिजिटल ढांचे से जोड़ने, जन्म-मृत्यु के विर्लीबत पंजीकरण को अधिक कठोर बनाने तथा अन्य विधायी एवं प्रशासनिक सुधारों की दिशा में भी कदम उठे। केरल का नाम विधिवत केरलम किए जाने का निर्णय भी इसी सत्र का हिस्सा रहा। ये उपलब्धियां बताती हैं कि यदि संसद चले तो कम समय में भी महत्वपूर्ण काम संभव है।

200 से अधिक फाउंडर्स ने पिच किए अपने बिजनेस आइडिया

गंगरेल जलाशय की खूबसूरत वादियों के बीच आयोजित फाउंडर्स मानसून रिट्रीट-2026 की थीम

धमतरी। धमतरी के गंगरेल जलाशय में उद्यमिता और नवाचार का अनूठा संगम देखने को मिला। यहां आयोजित फाउंडर्स मानसून रिट्रीट-2026 में 200 से भी ज्यादा स्टार्टअप फाउंडर्स, उद्यमी, मेंटर्स और स्टार्टअप इकोसिस्टम से जुड़े प्रतिनिधि शामिल हुए। कार्यक्रम में स्टार्टअप इंडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, छत्तीसगढ़ स्टार्टअप नीति, मार्केटिंग, निवेश और बिजनेस विस्तार जैसे विषयों पर मंथन किया गया।

कलेक्टर अविनाश मिश्रा ने कहा कि जिले में स्थानीय संसाधनों और युवाओं की प्रतिभा को उद्यमिता से जोड़कर रोजगार और नए व्यवसाय के अवसर तैयार किए जा रहे हैं। गंगरेल जलाशय की खूबसूरत वादियों के बीच आयोजित फाउंडर्स मानसून रिट्रीट-2026 की थीम थी— एस्केप। एंगेज। एलीवेट। एक दिवसीय इस आयोजन में 200 से अधिक स्टार्टअप संस्थापकों और उद्यमियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य उद्यमियों को एक साझा मंच उपलब्ध कराना, अनुभवों का आदान-प्रदान करना



और नए बिजनेस आइडिया, नवाचार और नेटवर्किंग को बढ़ावा देना रहा।

कार्यक्रम में धमतरी कलेक्टर अविनाश मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री और राज्य के विष्णुदेव साय की सरकार युवाओं के लिए नए आयाम गढ़ रही है। इसी के तहत जिले में युवाओं की प्रतिभा, स्थानीय संसाधनों और आधुनिक तकनीक को जोड़कर उद्यमिता को बढ़ावा देने की दिशा में काम किया जा रहा है। कृषि एवं कृषि प्रसंस्करण, पर्यटन, जल आधारित



गतिविधियों, खाद्य प्रसंस्करण, स्थानीय उत्पाद, डिजिटल तकनीक और सेवा क्षेत्र में स्टार्टअप की बड़ी संभावनाएं हैं। डीपीआईआईटी, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव संजीव सिंह ने स्टार्टअप फाउंडर्स से संवाद किया और स्टार्टअप इंडिया के तहत उपलब्ध नीतिगत सहयोग और वित्त पोषण के अवसरों की जानकारी दी। इसके अलावा अनुभवी उद्यमियों ने अपने संघर्ष, बिजनेस जर्नी, चुनौतियों और सफलता से

जुड़ी सीख साझा की। इतिहास शुरुआती चरण के स्टार्टअप में,द्वु का उपयोग, छत्तीसगढ़ स्टार्टअप नीति 2025–30, कृषि एवं बस्तर आधारित स्टार्टअप, प्रोडक्ट को बाजार तक पहुंचाने की रणनीति, सोशल मीडिया ब्रांडिंग और कानूनी अनुपालन जैसे विषयों पर भी विशेषज्ञ सत्र आयोजित किए गए। कार्यक्रम में सिर्फ बिजनेस और ज्ञानवर्धक सत्र ही नहीं, बल्कि फाउंडर्स के बीच नेटवर्किंग को भी खास महत्व दिया गया।

संस्थापक परिचय चक्र, इनडोर चैलेंज और विभिन्न फाउंडर-केंद्रित गतिविधियों के जरिए प्रतिभागियों को एक-दूसरे से जुड़ने का अवसर मिला। प्राकृतिक वातावरण में हुए इस संवाद के जरिए उद्यमियों ने नए संपर्क बनाए और अपने विचार साझा किए। कृषि, पर्यटन, जल संसाधन, खाद्य प्रसंस्करण और स्थानीय उत्पादों में मौजूद संभावनाओं को स्टार्टअप से जोड़कर जिले में रोजगार और नए व्यवसाय के अवसर पैदा करने की दिशा में यह आयोजन महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

राखी और गुलदस्तों ने बदली महिलाओं की तकदीर

दंतेवाड़ा। झोड़ियांबाडम गांव की महिलाएं छिंद के पत्तों से गुलदस्ता तैयार कर रहीं हैं। रक्षाबंधन करीब है, लिहाजा छिंद के पत्तों से राखियां भी बना रहीं हैं। सभी महिलाएं तारा स्व सहायता



समूह से जुड़ी हैं और रामबती पोडियाम के मार्गदर्शन में काम करती हैं। रामबती पोडियाम सफल ग्रामीण उद्यमी के रूप में पहचान बना चुकी हैं और अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रहीं हैं। वह साल 2020 से शासन की बिहान योजना से जुड़ी हैं। बिहान से जुड़ने से पहले रामबती दीदी की आजीविका मुख्य रूप से पारंपरिक कृषि और मजदूरी पर निर्भर थी। परिवार को आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं थी। पति की तबीयत भी अक्सर खराब रहती थी। मुश्किल परिस्थितियों ने उनके हांसले को कमजोर नहीं किया। स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। प्रशिक्षण ने उन्हें नई चीजें सीखने का अवसर दिया और धीरे-धीरे उनके भीतर आत्मविश्वास और उद्यमिता की भावना मजबूत होती गई। इसी दौरान उन्होंने छिंद के पत्तों से आकर्षक गुलदस्ते तैयार करने का हुनर सीखा। शुरुआत छोटे स्तर से हुई, लेकिन मेहनत और गुणवत्ता के दम पर यह काम धीरे-धीरे नियमित व्यवसाय में बदल गया। रामबती दीदी द्वारा तैयार किए जाने वाले छिंद के गुलदस्ते प्राकृतिक संसाधनों से बनाए जाते हैं। आकर्षक डिजाइन और स्थानीयता से जुड़े होने के कारण इनकी बाजार में अच्छी मांग है। एक गुलदस्ते की कीमत लगभग 80 से 120 रुपये तक होती है और वर्षभर में 3,000 से अधिक गुलदस्तों की बिक्री होती है। पिछले एक वर्ष में ही रामबती दीदी ने 6 लाख रुपये से अधिक के छिंद के गुलदस्तों का कारोबार किया है। खास बात यह है कि तीन दिवसीय बस्तर पंडुम आयोजन के दौरान ही लगभग 3 लाख रुपये के गुलदस्तों की बिक्री हुई। रामबती दीदी ने अपने व्यवसाय को किसी एक उत्पाद तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने त्योहारों और बाजार की मांग के अनुसार अलग-अलग उत्पाद तैयार कर अपनी आजीविका को सालभर चलने वाला कारोबार बना दिया है।

ग्राफ्टेड बैंगन की खेती से किसान सुरेन्द्र की आर्थिक स्थिति में आया सुधार

महासमुंद। परंपरागत खेती के साथ यदि किसान आधुनिक कृषि तकनीकों और उन्नत किस्मों को अपनाएं, तो कम क्षेत्र में भी उत्पादन और आमदनी को बढ़ाया जा सकता है। इसी तरह उद्यानिकी फसल के अंगीकरण के बाद ग्राफ्टेड बैंगन की खेती किसान श्री सुरेन्द्र के लिए अच्छी उत्पादन और अतिरिक्त आय का माध्यम बना।

किसान श्री सुरेंद्र बताते हैं कि कृषि की उन्नत तकनीक को अपनाने व नई पद्धति को जानकारी प्राप्त करने के लिए



उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों के संपर्क में रहते हैं। जिसके माध्यम से उन्हें राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत वर्ष 2025-26 में ग्राफ्टेड बैंगन फसल के लिए 30 हजार रुपए

का अनुदान प्राप्त हुआ। वे बताते हैं कि ग्राफ्टेड बैंगन की खेती से उन्हें कुल 144 क्विंटल बैंगन का उत्पादन मिला। उत्पादित बैंगन को बाजार मूल्य में बेचने पर उन्हें 2 लाख 39 हजार रुपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। उत्पादन और बाजार मूल्य ने किसान श्री सुरेंद्र को पारंपरिक खेती की तुलना में बेहतर आर्थिक परिणाम दिया। इससे अन्य किसान भी उन्नत तकनीक अपनाकर पारंपरिक खेती से आगे बढ़ने और अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

भरी बरसात में छात्र-पालक ने जड़कर किया प्रदर्शन

धमतरी। शैक्षणिक सत्र की शुरुआत के साथ स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति की मांग के साथ-

साथ युक्तियुक्तकरण के तहत स्कूलों को मर्ज किए जाने पर छात्रों के साथ पालकों का गुस्सा फूटने लगा है। सप्ताह के पहले दिन सोमवार को दो अलग-अलग जिलों से स्कूलों में ताला जड़ने की खबरें आईं। धमतरी



जिले के बारना शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में छात्रों के साथ पालकों ने तेज बारिश में शिक्षकों की मांग को लेकर ताला जड़ दिया है। लंबे समय से शिक्षक की मांग कर रहे ग्रामीणों ने स्पष्ट

कर दिया है कि शिक्षकों की नियुक्ति तक स्कूल में ताला लगा रहेगा। वहीं दूसरी ओर बालोद जिले में

भी शासकीय नवीन प्राथमिक शाला शिकारीटोला क्रमांक 2 में पालकों ने आज ताला जड़ दिया। पालकों ने स्कूल को युक्तियुक्तकरण के तहत माध्यमिक विद्यालय करियाटोला में मर्ज करने को

जुटिपूर्ण बताते हुए अधिकारियों पर उनकी मांगों की अनदेखी करने का आरोप लगाया। नाराज ग्रामीणों को मनाने के लिए मौके पर तहसीलदार देवेन्द्र नेताम और पुलिस कर्मी पहुंचे हैं।

3 करोड़ के गबन की जांच में दूसरा बड़ा खुलासा

5वीं वाहिनी का एक ओर प्रधान आरक्षक गिरफ्तार



जगदलपुर। जगदलपुर की 5वीं वाहिनी सशस्त्र बल की कर्मचारी कल्याण साख समिति में करीब 3 करोड़ रुपये के गबन के मामले में जांच का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है। इस मामले में अब पुलिस ने एक और प्रधान आरक्षक को गिरफ्तार किया है।

पहले समिति के अध्यक्ष शिवकांत तिवारी की गिरफ्तारी हुई थी, और अब उनके सहायक रहे प्रधान आरक्षक संजय चौहान को भी पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया है।

मामला कंगोली स्थित 5वीं वाहिनी की कर्मचारी कल्याण साख समिति से जुड़ा है। पुलिस के मुताबिक, वर्ष 2012 से 2021 के बीच लोन खातों और जमा राशि में हेराफेरी की गई और इसके लिए फर्जी दस्तावेजों का इस्तेमाल किया गया। शिकायत के आधार पर परपा थाने में मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान समिति के अध्यक्ष और प्रधान आरक्षक शिवकांत तिवारी को संदिग्ध पाए जाने पर 29 जुलाई को गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद अब वित्तीय कामकाज से जुड़े उनके सहायक प्रधान आरक्षक संजय चौहान की भूमिका भी जांच के घेरे में आई। पूछताछ के बाद पुलिस ने संजय चौहान को गिरफ्तार कर रिमांड पर लिया है। इस मामले में खास बात यह है कि पुलिस अभी जांच को सिर्फ दो आरोपियों तक

दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान समिति के अध्यक्ष और प्रधान आरक्षक शिवकांत तिवारी को संदिग्ध पाए जाने पर 29 जुलाई को गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद अब वित्तीय कामकाज से जुड़े उनके सहायक प्रधान आरक्षक संजय चौहान की भूमिका भी जांच के घेरे में आई। पूछताछ के बाद पुलिस ने संजय चौहान को गिरफ्तार कर रिमांड पर लिया है। इस मामले में खास बात यह है कि पुलिस अभी जांच को सिर्फ दो आरोपियों तक

सीमित नहीं मान रही है। बस्तर एसपी शलभ कुमार सिन्हा ने साफ कहा है कि जांच आगे बढ़ने पर यदि किसी और कर्मचारी की भूमिका सामने आती है तो उसकी भी गिरफ्तारी हो सकती है।फिलहाल, करीब 3 करोड़ रुपये के गबन की राशि की बरामदगी नहीं हुई है। ऐसे में पुलिस की जांच अब इस बात पर भी केंद्रित है कि रकम की हेराफेरी किस तरीके से की गई और इसमें और कौन-कौन लोग शामिल थे।

ट्रेनी डीएसपी के गनमैन ने इंसायस राइफल से खुद को मारी गोली



बस्तर। जगदलपुर जिला मुख्यालय में पदस्थ डीएसपी के गनमैन ने अपने ही सर्विस इंसायस राइफल से खुद को गोली मार ली। गोली चलते ही मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सर्विस इंसायस राइफल से चली गोली जवान के कंधे को छूकर निकल गई। मौके पर मौजूद लोगों ने हिम्मत दिखाते हुए जख्मी जवान को तुरंत जगदलपुर जिला महारानी अस्पताल पहुंचाया।

महारानी अस्पताल में जख्मी जवान का इलाज फिलहाल जारी है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि की घटना करीब 1 से 2 बजे के बीच की है। घटना की सूचना है, हालांकि इस बात की पुष्टि

से जख्मी जवान के परिजनों को दे दी गई है। जवान के परिजन महारानी अस्पताल पहुंच गए हैं। कोतवाली थाने ने भी घटनास्थल पर पहुंचकर जांच पड़ताल शुरू कर दी है। मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि जख्मी जवान को पेट्रोलिंग टीम की मदद से महारानी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

जख्मी जवान की पहचान विजय जेना के रूप में हुई है। विजय जेना जिला बल के जवान हैं और पिछले कुछ महीनों से डीएसपी के गनमैन के रूप में ड्यूटी कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि पारिवारिक विवाद के चलते जवान ने यह कदम उठाया है, हालांकि इस बात की पुष्टि

अभी नहीं हो पाई है। घटना की पूरी वजह को लेकर पुलिस जांच कर रही है, जांच के बाद ही पुलिस इस संबंध में कोई बयान देगी।

गोली जख्मी जवान के कंधे को छूकर निकल गई, जिसकी वजह से कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस के आलाा अधिकारी महारानी अस्पताल पहुंचे और जख्मी जवान की स्थिति की जानकारी ली। जवान के द्वारा खुद पर फायरिंग करने की घटना की पुष्टि सीएसपी सुमित कुमार ने की है। यदि आपके मन में कभी निराशा में आत्महत्या के विचार आ रहे हैं, या आप किसी मित्र के बारे में चिंतित हैं, या आपको भावनात्मक समर्थन की जरूरत है, तो ऐसे में कोई है जो हमेशा आपकी बात सुनने के लिए मौजूद करें— 04424640050 (24×7 उपलब्ध) या आईकॉल, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज की हेल्पलाइन - 9152987821 (सोमवार से शनिवार सुबह 8 बजे से रात 10 बजे तक उपलब्ध)।

छत्तीसगढ़
प्रमुख समाचार

स्टंटबाजों पर दुर्ग पुलिस की सख्ती, 12 हजार का चालान

दुर्ग। जिले की सड़कों को रेंसिंग ट्रैक और स्टंट का मैदान समझने वाले मनचलों के खिलाफ यातायात पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। सेंट्रल एवेन्यू मार्ग पर तेज रफ्तार में बाइक से खतरनाक स्टंट कर रहे दो युवकों पर भारी जुर्माना लगाकर पुलिस ने सबक सिखाया है। आम नागरिकों की शिकायत के बाद पुलिस ने फौरन एक्शन लिया और दोनों को बाइक जब्त की। इसके साथ ही 12,000 रुपये का भारी-भरकम चालान भी काटा। ?भिलाई के सिविक सेंटर यातायात जोन प्रभारी ने सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी सबूतों के आधार पर दोनों गाड़ियों की पहचान कर यह सख्त कदम उठाया। जांच के दौरान पाया गया कि दोनों ही चालक बिना किसी वैध ड्राइविंग लाइसेंस के वाहन दौड़ा रहे थे, जिससे राहगीरों की जान को गंभीर खतरा बना हुआ था। दुर्ग पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि अगर आपको भी सड़कों पर ऐसे स्टंटबाज दिखें, तो तुरंत यातायात हेल्पलाइन नंबर 9479192029 पर सूचना दें। पुलिस ने तत्काल दोनों के परिजनों को थाने बुलाकर कड़ी हिदायत भी दी।

वित्तीय एवं साइबर सुरक्षा

जागरूकता के लिए दिया प्रशिक्षण

महासमुंद। नीति आयोग द्वारा शुरू किए गए आकांक्षी जिला तथा विकासखंड कार्यक्रम को परिणाम आधारित विकास को गति देने और नीति आयोग के तय किए गए सूचकांकों के संतुष्टिकरण हेतु डेवेलपमेंट पार्टनर के सहयोग से लक्ष्य प्राप्त किया जा रहा है। इसके माध्यम से एन.आई.आई.टी. फाउंडेशन युवाओं, महिलाओं और समुदाय के सदस्यों के बीच प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर जागरूक किया जा रहा हैं। जिले में आदिवासी विकास विभाग एवं खेल एवं युवा कल्याण महासमुंद द्वारा संचालित खेलों इंडिया लघु केंद्र एकलव्य आवासीय विद्यालय भोरिंग के बालक एवं बालिका, खिलाड़ी, प्रशिक्षक, स्टॉफ एवं खेल अधिकारी वर्चुअल शामिल हुए। जिले में प्रशिक्षण समन्वयक मनोष केशरवानी, एन.आई.आई.टी. फाउंडेशन अनूप शर्मा द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया, जिसमें खेल अधिकारी मनोज धृतलहारे, प्राचार्य एकलव्य महेंद्र टंडन, एकलव्य आवासीय विद्यालय भोरिंग महासमुंद के विद्यालयीन स्टॉफ, विद्यार्थी उपस्थि रहे।

पहाड़ और बड़ी गुफा में

विराजमान जटाशंकर भोलेनाथ

एमसीबी। घने जंगल, पहाड़ और फिर 730 सीढ़ियों की थका देने वाली चढ़ाई के बाद सामने होती है एक प्राकृतिक गुफा. अंधेरे में टॉच की रोशनी डालते ही दिखते हैं काले पत्थर के स्वयंभू शिवलिंग। फिर एक प्राकृतिक गुफा, जहां गुफा के अंदर दूसरी गुफा और वो इतनी बड़ी कि लगभग 1000 लोग आश्रय ले सकते हैं। वहीं विराजमान हैं जटाशंकर भगवान भोलेनाथ। गुफा की चट्टानों से गिरती जल की बूँदें हर पल शिवलिंग का अभिषेक करती रहती हैं। गर्मी हो या बरसात, यह जलधारा थमती नहीं। जिला मुख्यालय मनेंद्रगढ़ से 54 किमी और बिहारपुर के ग्राम सोनहरी से 12 किमी दूर यह स्थल आज आस्था, पर्यटन और रोमांच तीनों का केंद्र बन चुका है। जटाशंकर की यात्रा आसान नहीं, पर अविस्मरणीय है। तलहटी से गुफा तक पहुंचने के लिए श्रद्धालुओं को पहाड़ी और जंगल के बीच बनी लगभग 730 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। रास्ते में हरियाली, शांत वातावरण और बीच-बीच में दिखते झरने थकान भुला देते हैं। गुफा के मुहाने पर पहुंचकर सबसे रोमांचक हिस्सा शुरू होता है।

ठाड़पथरा में दो दिवसीय

मानसून ट्रैक संपन्न

गौरेला-पेंड्रा-मरवाही। जिला प्रशासन एवं बनमनई इकोकेयर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में मड हाउस ठाड़पथरा में दो दिवसीय एवं एक रात्रि मानसून ट्रैक का सफल आयोजन किया गया। राज्य के विभिन्न जिलों से पहुंचे प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए ठाड़पथरा की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध जैव विविधता और स्थानीय लोक संस्कृति का अनुभव लिया। आयोजन के शुभारंभ पर स्थानीय पर्यटन समिति के सदस्यों ने प्रतिभागियों का पारंपरिक रूप से पुष्पगुच्छ भेंट कर आत्मीय स्वागत किया। इसके बाद ‘मदर ट्री बायोडायवर्सिटी ट्रैक’ के माध्यम से प्रतिभागियों ने क्षेत्र की वन संपदा एवं जैव विविधता का अवलोकन किया। पर्यावरण संरक्षण एवं जैव विविधता के संरक्षण के महत्व पर चर्चा की। शाम के सत्र में पर्यटन समिति के सदस्यों और प्रतिभागियों के बीच संवाद हुआ तथा स्थानीय लोककथाओं से परिचय कराया । प्रतिभागियों ने स्थानीय पारंपरिक व्यंजनों का भी आनंद लिया। दूसरे दिन मड हाउस से ‘माई के मंडप’ तक पैदल ट्रैक का आयोजन किया गया।

कोण्डागांव में 20 अगस्त को

रोजगार मेला, 63 पदों पर भर्ती

कोण्डागांव। जिले के शिक्षित युवक-युवतियों को निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केंद्र, कोण्डागांव द्वारा 20 अगस्त 2026, गुरुवार को रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। रोजगार मेला सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केंद्र, कलेक्ट्रेट परिसर कोण्डागांव में आयोजित होगा। जिला रोजगार अधिकारी द्वारा जारी जानकारी के अनुसार रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की संस्थाओं द्वारा विभिन्न पदों पर कुल 63 रिक्त पदों पर भर्ती की जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थियों को अपने समस्त शैक्षणिक प्रमाण-पत्र, रोजगार पंजीयन, निवास प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र, आधार कार्ड सहित मूल दस्तावेज एवं उनकी छायाप्रतियां साथ लाना होगा। रोजगार मेले में यूपीडीटी एजुकेशन टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड द्वारा कुल 43 पदों पर भर्ती की जाएगी। इनमें प्रशिक्षण अधिकारी के 30 पद, ओ.टी. तकनीशियन के 3 पद तथा नर्सिंग स्टाफ के 10 पद शामिल हैं।

शावकों के गड़े में गिरने से नाराज मादा भालू ने ग्रामीणों को दौड़ाया

कांकेर। कांकेर वन परिक्षेत्र अंतर्गत ग्राम कोकपुर में सोमवार सुबह उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक मादा भालू सुबह टहरने और खेलों की ओर जा रहे ग्रामीणों को अचानक दौड़ाये लगी।

गांव के उपसरपंच चुनेश्वर जैन के अनुसार, मादा भालू रात के समय विचरण करते हुए पहाड़ी क्षेत्र की ओर गई थी। वापस लौटते समय उसके दो शावक सड़क किनारे स्थित करीब 7 फीट गहरे पुराने सेफ्टिक टैंक में गिर गए। मादा भालू अपने दोनों बच्चों को गड्डे से बाहर निकालने का लगातार प्रयास करती रही, लेकिन गड्डा ज्यादा गहरा होने के कारण वह उन्हें बाहर नहीं निकाल पा रही थी। इसी दौरान वह सड़क पर आकर घूमने लगी और आसपास मौजूद ग्रामीणों को दौड़ाये लगी। सुबह मॉर्निंग वॉक और खेलों की ओर जा रहे ग्रामीणों ने मादा भालू को देखा। अचानक भालू द्वारा दौड़ाए जाने से ग्रामीणों में कुछ

ग्रामीणों व वन विभाग ने रेस्क्यू किया



देर के लिए भय का माहौल बन गया। बाद में जानकारी मिली कि मादा भालू के दोनों शावक सड़क किनारे गहरे गड्डे में फंसे हुए हैं। ग्रामीणों ने तत्काल इसकी सूचना ग्राम पंचायत सरपंच निशा दुर्गा और उप सरपंच चुनेश्वर कुमार जैन को दी। सरपंच एवं उप सरपंच ने वन विभाग को घटना की जानकारी दी। सूचना मिलते ही वन विभाग के बीट ऑफिसर चंद्रशेखर तेता मौके पर पहुंचे। वन्यप्राणी विशेषज्ञ चेतन पवार को

भी सूचना देकर घटनास्थल पर बुलाया गया। चेतन पवार के पहुंचने के बाद सबसे पहले ड्रोन के माध्यम से घटनास्थल और गड्डे की स्थिति का जायजा लिया गया। इसके बाद ग्रामीणों के सहयोग से सुरक्षित रेस्क्यू की योजना बनाई गई। वन विभाग की टीम और ग्रामीणों ने मिलकर गहरे गड्डे में एक सीढ़ी (सीढ़ी) उतारी, ताकि दोनों शावक स्वयं सीढ़ी के सहारे बाहर निकल सकें। रेस्क्यू के दौरान ग्रामीणों और वन

विभाग की टीम ने पूरी सावधानी बरती, जिससे मादा भालू और उसके दोनों शावकों को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचे। कोकपुर के ग्रामीण के द्वारा भालू गड्डे में गिरने की सूचना मिली थी तब वन विभाग की टीम तुरंत मौके पर पहुंची, जहां से 2 भालू के शावकों को गड्डे से सुरक्षित बाहर निकाला गया है- अमिंतेश परिहार, कांकेर वन परिक्षेत्र अधिकारी

कांकेर वन विभाग ने ग्रामीणों से जंगल एवं पहाड़ी क्षेत्र के आसपास सुबह-शाम अकेले नहीं जाने की अपील की है। साथ ही किसी भी वन्यजीव के दिखाई देने पर उसके करीब जाने या उसे छेड़ने के बजाय तत्काल वन विभाग को सूचना दें। विशेषकर यदि किसी वन्यजीव के बच्चे दिखाई दें तो उनके आसपास जाने से बचें, क्योंकि ऐसी स्थिति में मादा वन्यजीव अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए आक्रामक हो सकती है।

सावन का तीसरा सोमवार, छत्तीसगढ़ के शिवालियों में लंबी कतार

एमसीबी। सावन महीने के तीसरे सोमवार पर भी छत्तीसगढ़ के शिवालियों में आस्था और भक्ति के रंग दिख रहे हैं। कोकपुर के ग्रामीण के द्वारा भालू गड्डे में गिरने की सूचना मिली थी तब वन विभाग की टीम तुरंत मौके पर पहुंची, जहां से 2 भालू के शावकों को गड्डे से सुरक्षित बाहर निकाला गया है- अमिंतेश परिहार, कांकेर वन परिक्षेत्र अधिकारी



भगवान शिव के जयकारों के बीच महिलाओं ने पदयात्रा करते हुए नागेश्वर महादेव मंदिर पहुंचकर सामूहिक जलाभिषेक किया। मनेंद्रगढ़ में लगातार तीसरे वर्ष हनुमान चालीसा समिति की सभी सदस्यों ने सावन सोमवार के इस धार्मिक आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस वर्ष महिलाओं ने पीले वस्त्र धारण कर हनुमान पहनकर हनुमान टेकरि पहुंचीं और वहां से पवित्र जल लेकर नागेश्वर महादेव का सामूहिक जलाभिषेक किया। आयोजन के दौरान महिलाओं में खासा उत्साह देखने

को मिला। धार्मिक भजनों और जयघोष से पूरा वातावरण शिवमय हो उठा। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैकुंठपुर से प्रसिद्ध छुरीगढ़धाम में भगवान महादेव के जलाभिषेक के लिए भव्य कांवड़ यात्रा निकाली गई। यात्रा प्रारंभ होने से पहले कांवरियों ने प्रेमाशंकर महादेव मंदिर से पूजा-अर्चना की। इसके बाद सभी कांवरिए गेज नदी पहुंचे, जहां उन्होंने विधि-विधान से पवित्र जल भरा और कांवर में जल लेकर छुरीगढ़धाम के लिए रवाना हुए। कांवरियों के हाथों में सजी कांवर, गुंजते शिव जयकारे और भक्ति गीतों ने पूरे माहौल को भक्तिमय बना दिया। यात्रा को लेकर बैकुंठपुर शहर में सुबह से ही धार्मिक उत्साह का माहौल देखने को मिला।

संक्षिप्त समाचार

छात्र छत्तीसगढ़ के कॉलेजों में अब 31

अगस्त तक ले सकेंगे प्रवेश

रायपुर। उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम वर्मा ने कहा कि हमारी सरकार का मूल ध्येय प्रदेश के अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा का प्रकाश पहुँचाना है। दूरस्थ और ग्रामीण अंचलों के कई मेधावी युवा विभिन्न व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण समय पर प्रवेश नहीं ले सके थे। हम नहीं चाहते कि तिथियों के फेर में किसी भी योग्य विद्यार्थी का एक साल खराब हो या वह उच्च शिक्षा से वंचित रह जाए। छात्रहित को सर्वोपरि रखते हुए प्रवेश की तारीख 31 अगस्त तक बढ़ाई गई है। मैं सभी विद्यार्थियों से अपील करता हूँ कि वे इस अवसर का पूरा लाभ उठाएं। छत्तीसगढ़ शासन के उच्च शिक्षा विभाग ने प्रदेश के हजारों विद्यार्थियों को बड़ी राहत देते हुए शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए कॉलेजों में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। राज्य के जिन शासकीय और निजी महाविद्यालयों में अभी भी सीटें रिक्त हैं, वहाँ छात्र अब 31 अगस्त 2026 तक दाखिला ले सकेंगे। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा इस संबंध में विधिवत आदेश जारी कर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले विभाग द्वारा जारी आदेश के तहत प्राचार्य स्तर पर प्रवेश की समय सीमा 31 जुलाई तक और कुलपति की अनुमति से 14 अगस्त तक तय की गई थी। लेकिन अंतिम तिथि बीतने के बाद भी कई महाविद्यालयों में सीटें खाली रह गई थीं और दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले कई अभ्यर्थी समय पर आवेदन नहीं कर पाए थे। इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए शासन ने तिथि विस्तार का यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया है।

रात 12 बजे वैद्य फूड में राजस्व, खाद्य

औषधि एवं पुलिस की संयुक्त टीम की दक्षिा

रायपुर। एनालॉग पनीर के निर्माण एवं विक्रय पर प्रतिबंध के उल्लंघन की आशंका को देखते हुए राजस्व,खाद्य एवं औषधि प्रशासन, पुलिस विभाग की संयुक्त टीम ने महासमुंद के भलेसर रोड स्थित वैद्य फूड में बीती देर रात दक्षिा दी। इस कार्रवाई के दौरान लगभग तीन घंटे तक संस्थान की जांच की गई। रात्रि करीब 12 बजे राजस्व तथा खाद्य एवं औषधि प्रशासन के अधिकारियों की संयुक्त टीम वैद्य फूड पहुंची। जांच के दौरान मध्य रात्रि में पनीर का निर्माण किए जाने की स्थिति सामने आई। मौके पर उपलब्ध पनीर की गुणवत्ता एवं निर्माण में प्रयुक्त सामग्री को लेकर संदेह उत्पन्न होने पर लगभग 200 किलोग्राम पनीर को जब्त किया गया। अधिकारियों द्वारा मौके पर उपलब्ध खाद्य सामग्री एवं निर्माण प्रक्रिया से संबंधित आवश्यक जानकारी भी संकलित की गई। आज सुबह कार्रवाई के दौरान विभाग द्वारा सील किए गए कोल्ड स्टोरेज में रखी खाद्य सामग्री को नियमानुसार खोलकर उसकी जांच की गई। खाद्य सामग्री की पुष्टि एवं गुणवत्ता परीक्षण के लिए पनीर का नमूना लिया गया, जिसे जांच हेतु राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला, रायपुर भेजा गया है।

महाराष्ट्र मंडल में हुई पार्थिव

शिवलिंग की पूजा

रायपुर। महाराष्ट्र मंडल में पार्थिव शिवलिंग पूजन का श्रद्धामय आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में महिलाओं ने अपने हाथों से मिट्टी का पार्थिव शिवलिंग बनाया और विधि विधान से उसकी पूजा-अर्चना की। मंडल के सचिव आचार्य चेतन ढंडवते ने मंत्रोच्चार के साथ पूजन विधि संपन्न कराई। उन्होंने बताया कि सावन माह के विशेष अवसर पर 33 महिलाओं ने पार्थिव शिवलिंग का पूजन कर रुद्राभिषेक भी किया। मंडल परिसर आचार्य ढंडवते के मंत्रोच्चार और श्रद्धालुओं के हर-हर महादेव के जयकारे से गूँज उठा। आरती के बाद फलाहार और प्रसाद वितरण किया गया। पूजन व प्रसाद ग्रहण करने के बाद सभासदों ने महाराष्ट्र मंडल के सामाजिक कार्यों को बढ़ाने और गति प्रदान करने का संकल्प लिया। उन्होंने पूजा के दौरान बताया कि भगवान श्रीराम ने लंका जाकर रावण वध करने और मां सीता को वहां से वापस लाने से पहले रामेश्वरम में समुद्र तट पर मिट्टी का पार्थिव शिवलिंग बनाकर उसका पूजन किया था। ढंडवते के अनुसार पूजन कार्यक्रम में मंडल की महिला प्रमुख विशाखा तोपखानेवाले, उपाध्याक्ष गीता श्याम दलाल, कार्यकारिणी सदस्य नमिता शेष विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

नागपंचमी पर मंत्री अग्रवाल ने किया

भगवान भोलेनाथ का पूजन-अर्चन

रायपुर। पावन सावन मास के तृतीय सोमवार एवं नागपंचमी के शुभ अवसर पर पर्यटन, संस्कृति एवं धर्मस्व मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने लखनपुर स्थित प्राचीन शिव मंदिर में भगवान भोलेनाथ के विधिवत पूजन-अर्चन किया। उन्होंने भगवान शिव की आराधना कर समस्त प्रदेशवासियों के सुख, शांति, समृद्धि, आरोग्य एवं मंगलमय जीवन की कामना की। मंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि देवाधिदेव महादेव की असीम कृपा सदैव प्रदेशवासियों पर बनी रहे। भगवान शिव के आशीर्वाद से प्रत्येक परिवार सुख, शांति, समृद्धि एवं सौभाग्य से परिपूर्ण हो तथा सभी के जीवन में नई ऊर्जा, उमंग और मंगल का संचार हो।

छत्तीसगढ़ भाजपा में कार्यकारी

अध्यक्ष की आहट

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी की केंद्रीय टीम के ऐलान के बाद अब छत्तीसगढ़ भाजपा के भीतर संगठनात्मक स्तर पर बड़े फेरबदल की सरगर्मियां बढ़ गई हैं। चर्चाएं जोरों पर हैं कि राज्य में संतुलन के दैनिक कामकाज और आगामी सांगठनिक गतिविधियों को गति देने के लिए पार्टी जल्द ही कार्यकारी अध्यक्ष के नाम का ऐलान कर सकती है। दरअसल भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव उत्तर प्रदेश में एक सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से चोटिल हो गए थे और फिलहाल दिल्ली में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। केंट्रटर्ग के मुताबिक चोट से पूरी तरह उबरने में उन्हें अभी कई महीनों का वक लग सकता है।

राजधानी/छत्तीसगढ़

गृहग्राम बगिया में सुबह-सुबह खेत में उतरकर

मुख्यमंत्री साय ने हल चलाकर की बियासी

- बोले- खेती मेरे लिए आजीविका नहीं, जीवन का संस्कार**

रायपुर। किसान परिवार में जन्मे मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का अपनी माटी और खेती-किसानी से गहरा जुड़ाव एक बार फिर देखने को मिला। मुख्यमंत्री साय आज सुबह जशपुर जिले के अपने गृहग्राम बगिया में खेत पहुंचे और पारंपरिक रूप से हल चलाकर बियासी की। खेत में उतरकर हल की मूठ थामे मुख्यमंत्री साय सहज ही एक किसान की भूमिका में नजर आए। इस दौरान उन्होंने खेती-किसानी से जुड़ी अपनी पुरानी स्मृतियों को भी साझा किया।

मुख्यमंत्री साय ने हरे-भरे खेत में मिट्टी की सौंथी सुगंध और बैलों के साथ खेती करते हुए कहा कि अपने गांव, अपनी माटी और अपने खेत से जुड़ाव का सुख ही अलग है। हल की मूठ थामते ही खेती-किसानी से जुड़ी पुरानी स्मृतियां एक बार फिर जीवंत हो उठती हैं। खेतों के बीच बिताया समय मन को असीम सुकून देने के साथ नई ऊर्जा से भर देता है।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि वे स्वयं किसान परिवार से आते हैं और बचपन से खेती-किसानी को बहुत करीब से देखा और अनुभव किया है। खेती उनके लिए केवल आजीविका का माध्यम नहीं,



बल्कि जीवन का संस्कार है। गांव और खेतों ने ही उन्हें श्रम का सम्मान करना, प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर चलना और अपनी जड़ों से जुड़े रहना सिखाया है।

उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की पहचान यहां की माटी, मेहनतकश किसानों और समृद्ध कृषि परंपराओं से जुड़ी हुई है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में खेती का महत्वपूर्ण स्थान है। पौढ़ियों से हमारे किसान अपने परिश्रम से धरती को सींचते हुए प्रदेश की समृद्धि की नींव मजबूत करते आए हैं। छत्तीसगढ़ के तीज-त्योहार, परंपराएं और ग्रामीण जीवन भी कृषि से गहराई से जुड़े हुए हैं।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि आधुनिकता के इस दौर में भी अपनी परंपराओं और जड़ों से जुड़ाव

बनाए रखना महत्वपूर्ण है। खेती हमें परिश्रम, धैर्य और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का संदेश देती है। किसान खेत में केवल फसल नहीं उगाता, बल्कि अपने श्रम से पूरे समाज के जीवन और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी संबल देता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ की माटी, हमारी समृद्ध कृषि परंपरा और हमारे मेहनतकश अन्नदाता किसान सदैव उनके हृदय के सबसे करीब हैं। किसानों

की खुशहाली और कृषि की समृद्धि ही प्रदेश की समृद्धि का मजबूत आधार है। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के अन्नदाता किसानों के परिश्रम को नमन करते हुए उनके जीवन में खुशहाली तथा खेतों में भरपूर फसल की कामना की।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का जीवन ग्रामीण परिवेश और खेती-किसानी से गहराई से जुड़ा रहा है। सार्वजनिक जीवन की व्यस्तताओं के बीच जब भी उन्हें अवसर मिलता है, वे अपने गांव, खेत और ग्रामीण परिवेश से जुड़कर आत्मीयता का अनुभव करते हैं। आज सुबह गृहग्राम बगिया के खेत में बैलों के साथ हल चलाते मुख्यमंत्री की सहजता में अपनी माटी और कृषि परंपरा के प्रति उनका यही गहरा लगाव दिखाई दिया।

20 अगस्त की ग्राम सभाओं में वीबी-जीरामजी के अंतर्गत 2026-27 के कार्यों का होगा अनुमोदन

रायपुर। विकसित भारत-रोजगार और आजीविका गारंटी मिशन (ग्रामीण) (वीबी - जीरामजी) के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए 20 अगस्त, 2026 को आयोजित होने वाली ग्राम सभाओं में योजना से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की जाएगी। ग्राम सभाओं में ग्रामीणों को योजना के प्रावधानों, अधिकारों, लाभों एवं अनुमेय कार्यों की जानकारी देने के साथ-साथ वित्तीय वर्ष 2026-27 में योजना के अंतर्गत लिए जाने वाले कार्यों का ग्राम सभा से अनुमोदन कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने 6 अगस्त को पत्रकार वार्ता में कहा था कि वीबी - जीरामजी के अंतर्गत सभी विकास कार्यों का चयन ग्राम सभा की स्वीकृति से किया जाएगा। चालू वित्तीय वर्ष में मनरेगा एवं वीबी - जीरामजी के माध्यम से राज्य को लगभग 6 हजार 855 करोड़ रुपए प्राप्त होंगे, जो ग्रामीण रोजगार एवं विकास कार्यों के लिए राज्य में अब तक का सबसे बड़ा वित्तीय निवेश है। योजना के लिए वर्ष 2026-27 में 5,591.42 करोड़ रुपए का प्रस्तावित बजट रखा गया है तथा प्रथम



किस्त के रूप में भारत सरकार से 1,538 करोड़ रुपए से अधिक की वित्तीय स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

मुख्यमंत्री ने ग्रामीण विकास को नई गति देने के उद्देश्य से ‘मेरी बेटी, मेरा अधिमान’ अभियान का भी शुभारंभ किया है। 15 अगस्त, 2026 से 26 जनवरी, 2027 तक चलने वाले इस अभियान के अंतर्गत प्रत्येक गांव में मुक्तिधाम एवं प्रतीक्षालय तथा ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय विद्यालयों में बालिकाओं के लिए शौचालय निर्माण जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए जाएंगे। इन कार्यों सहित योजना के अंतर्गत अन्य विकास कार्यों का चयन एवं अनुमोदन ग्राम पंचायत और ग्राम सभा की सहभागिता एवं स्वीकृति

के आधार पर किया जाएगा।

20 अगस्त की ग्राम सभाओं में ग्राम की स्थानीय आवश्यकता, उपलब्ध संसाधनों तथा ग्रामीणों की मांग के आधार पर वित्तीय वर्ष 2026-27 में वीबी - जीरामजी के अंतर्गत कराए जाने वाले कार्यों पर चर्चा की जाएगी। प्रस्तावित कार्यों को ग्राम सभा के समक्ष रखा जाएगा और अनुमोदन के पश्चात उन्हें नियमानुसार स्वीकृति एवं क्रियान्वयन के लिए आगे बढ़ाया जाएगा।

योजना के अंतर्गत 318 प्रकार के अनुमेय कार्यों को चार प्रमुख श्रेणियों में शामिल किया गया है। इनमें 107 जल संरक्षण एवं जल संवर्धन, 90 ग्रामीण अधोसंरचना, 86 आजीविका संवर्धन तथा 35 जलवायु अनुकूलन एवं आपदा प्रबंधन से संबंधित कार्य शामिल हैं। ग्राम सभा में स्थानीय आवश्यकता के अनुसार इन कार्यों में से प्राथमिकता वाले कार्यों का चयन किया जा सकेगा।

जल संरक्षण के अंतर्गत तालाब, चेकडैम, रिचार्ज संरचनाएं, सिंचाई विस्तार, भू-जल एवं मृदा संरक्षण तथा वृक्षारोपण जैसे कार्यों को प्राथमिकता दी जाएगी।

नागपंचमी पर सीएम साय ने पत्नी संग किया

फलेश्वरनाथ महादेव मंदिर में पूजा-अर्चना

- पार्थिव शिवलिंग निर्माण में बने सहभागी, प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि व खुशहाली की कामना**

रायपुर। पवित्र सावन माह के तीसरे सोमवार और नागपंचमी के पावन अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने बगिया स्थित श्री फलेश्वरनाथ महादेव मंदिर में धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या साय के साथ भगवान भोलेनाथ की पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख, शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इस दौरान अपनी पत्नी के साथ पार्थिव शिवलिंग का निर्माण भी किया और लोगों से एक लाख 11 हजार 111 पार्थिव शिवलिंग निर्माण एवं पूजन के धार्मिक अनुष्ठान में सहभागी बने की अपील भी किया।

बताया जाता है कि मैनी नदी के तट पर स्थित श्री फलेश्वरनाथ महादेव मंदिर में 17 से 19 अगस्त तक एक लाख 11 हजार 111 पार्थिव शिवलिंग निर्माण एवं पूजन का तीन न दिवसीय दिवसीय विशेष



धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन में मुख्यमंत्री श्री साय एवं कौशल्या साय श्रद्धापूर्वक पार्थिव शिवलिंग निर्माण में सहभागी बने और पूरे विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने प्रदेशवासियों को सावन मास एवं नागपंचमी की बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि भगवान भोलेनाथ की कृपा सदैव प्रदेशवासियों पर बनी रहे और छत्तीसगढ़ निरंतर विकास, शांति एवं समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ता रहे। उन्होंने कहा कि भगवान भोलेनाथ के आशीर्वाद से छत्तीसगढ़ सरकार प्रदेश के विकास और जनकल्याण के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ निरंतर कार्य कर रही है।

अंग्रेजो की चाटुकारिता करने वाले कांग्रेस को वंदेमातरम का पाठ पढ़ा रहे: बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने पत्रकारो से चर्चा करते हुये कहा कि पिछले तीन दिनों से भारतीय जनता पार्टी का हर छोटा बड़ा नेता कांग्रेस को वंदे मातरम को सम्मान का पाठ पढ़ा रहा। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता आदरणीय सोनिया गांधी जी के बारे में अमर्गल और झूठी बातें कर रहे, जबकि कांग्रेस मुख्यालय में पूरा वंदेमातरम गायन हुआ था। जो भाजपा आजादी की लड़ाई के समय अंग्रेजो की चाटुकारिता करती थी, तब कांग्रेस के नेता वंदेमातरम गाकर अंग्रेजो का विरोध करते थे। उस समय भाजपाई अंग्रेजो का साथ देते थे। भाजपा कांग्रेस को वंदे मातरम देश भक्ति न सिखाये। हम तो हर कार्यक्रम में वंदेमातरम गाते हैं, भाजपा को चुनौती देता हूँ, अपने कार्यालय में वंदे मातरम गाने का एक वीडियो जारी करें। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा

कि प्रधानमंत्री ने लाल किला से 15 अगस्त को जो उद्घोषण दिया वह देश और प्रदेश की पिछले तीन दिनों से भारतीय जनता पार्टी का हर छोटा बड़ा नेता कांग्रेस को वंदे मातरम को नक्सल विचारधारा से जोड़ा। यह देश की भावी पीढ़ि का अपमान है। आप देश के युवाओं को साफ निष्पक्ष नीक्षा प्रणाली दे पा नहीं रहे। आपके राज में नौकरियां बेची जा रही है। विरोध पर बच्चे सामने आ रहे तो वे नक्सली हो गये, देश के प्रधानमंत्री भारत की 65 प्रतिशत युवा आबादी से माफ़ी मांगे।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भारतीय रेल के अधिकृत फेसबुक पेज पर देश के सभी 70 रेल डिवीजन के समय पालन की रैंकिंग प्रसारित की गयी है। इस रैंकिंग में देश के सभी 70 डिवीजनों में चलने वाली ट्रेनों के समय/विलंब पर चलने का आकलन कर इस सूची को बनाया गया है।



इस सूची में रायपुर डिवीजन 61वें, नागपुर डिवीजन 57 वें और बिलासपुर डिवीजन 68 वें नंबर पर है, इस सूची को देख कर बहुत ही अफसोस हो रहा है कि छत्तीसगढ़ और मध्य भारत के सबसे महत्वपूर्ण व सबसे अधिक आय अर्जित करने वाले बिलासपुर मंडल और उसमें सम्मिलित रेल डिवीजन बिलासपुर , रायपुर व नागपुर का उपयोग रेल मंत्रालय द्वारा मात्र आय अर्जित करने के लिए किया जा रहा जा रहा है। इन डिवीजनों में

रूपकुमारी चौधरी भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष

नई दिल्ली-रायपुर।

भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी घोषित हो गई है। छत्तीसगढ़ से महासमुंद सांसद रूपकुमारी चौधरी को भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष व दीपक महरूके को सोशल मीडिया का राष्ट्रीय संयोजक बनाकर बड़ी जिम्मेदारी दी गई है। सूची में 13 उपाध्यक्ष व 8 महासचिव के नाम शामिल हैं।

भारतीय जनता पार्टी ने सोमवार को अपनी नई राष्ट्रीय टीम की घोषणा की। इसमें राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया और पूर्व राष्ट्रीय महासचिव राम माधव को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया है।

राजे और माधव उन 13 नेताओं में शामिल हैं जिन्हें राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। सूची में उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत,



बैजयंत जय पांडा, डी पुरंदेश्वरी, रेखा वर्मा, वर्षाबेन नरेंद्रभाई दोशी, भारती प्रवीण पवार, मनप्रीत सिंह बादल, लाल सिंह आर्य, एम नागराजा, तारिक मंसूर और मधुचंद्र कर भी शामिल हैं। बीजेपी ने आठ राष्ट्रीय महासचिवों की नियुक्ति की है। इस सूची में स्मृति ईरानी के साथ-साथ विनोद तावड़े, सुनील बंसल, बिप्लब कुमार देब, सतीश पुनिया, गजेंद्र पटेल, हरीश द्विवेदी और संजय भाटिया शामिल हैं।

बीजेपी के संगठनात्मक सचिव बीएल संतोष राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बने रहेंगे, जबकि शिवप्रकाश और सौदान सिंह को राष्ट्रीय संयुक्त महासचिव (संगठन) नियुक्त किया गया है। पीयूष गोयल को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष और राजेश मंगल को राष्ट्रीय संयुक्त कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पार्टी ने अपने संगठन और आउटरीच विंग में भी नियुक्तियों की घोषणा की है। संबित पात्रा को नॉर्थ-ईस्ट कोऑर्डिनेटर बनाया गया है।

उद्योग मंत्री के प्रयासों से कोरबा के विकास कार्यों को मिली 5.44 करोड़ की सौगात

रायपुर। प्रदेश के कैबिनेट

मंत्री एवं कोरबा विधायक श्री लखन लाल देवांगन के सशक्त नेतृत्व में कोरबा नगर में मूलभूत सुविधाओं को मजबूत करने के संकल्प के साथ जिला खनिज



न्यास (डीएमएफ) मद से 31 विभिन्न विकास कार्यों के लिए 5.44 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्राप्त हुई है। स्वीकृत कार्यों के तहत नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में सीसी रोड एवं नाली निर्माण सहित आवश्यक मूलभूत विकास कार्य किए जाएंगे। इन कार्यों से वार्डों एवं मोहल्लों में आवागमन सुगम होने के साथ ही बारिश के दौरान जल निकासी की समस्या से भी राहत मिलेगी।

मंत्री श्री देवांगन द्वारा कोरबा शहर के बड़े विकास कार्यों के साथ-साथ वार्डों और मोहल्लों में नागरिकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सड़क, नाली एवं अन्य अधोसंरचना संबंधी कार्यों के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में डीएमएफ मद से 31 कार्यों के लिए 5.44 करोड़ रुपये की स्वीकृति आदेश जारी किया गया है। गौरतलब है कि हाल ही में 15वें

वित्त मद से कोरबा नगर निगम क्षेत्र में अधोसंरचना के 100 कार्यों के लिए 25.95 करोड़ रुपये, पेयजल से संबंधित 15 कार्यों के लिए 7.52 करोड़ रुपये तथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन कार्यों के लिए 1.79 करोड़ रुपये की स्वीकृति भी प्राप्त हो चुकी है।

मंत्री श्री देवांगन ने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि स्वीकृत सभी कार्यों की टेंडर प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण कर निर्माण कार्य प्रारंभ किए जाएं, ताकि नागरिकों को इन विकास कार्यों का लाभ जल्द से जल्द मिल सके।

वार्ड क्रमांक 05, लवली केयर स्कूल से काली मंदिर चौक तक एवं संजय जायसवाल के घर के सामने स्थित नाला निर्माण कार्य लागत 20 लाख रूपए, वार्ड क्रमांक 11 अंतर्गत संजय नगर में फल वाला मिश्रा जी घर से लेकर टावर तक सीसी रोड व ढकन प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में डीएमएफ मद से 31 कार्यों के लिए 5.44 करोड़ रुपये की स्वीकृति आदेश जारी किया गया है। गौरतलब है कि हाल ही में 15वें

सनातन धर्म में कोई कमी नहीं : बाबा रामदेव

- लोगों को तलवार-चमत्कार दिखाकर और भ्रातियां फैलाकर धर्म बदलने पर किया गया मजबूर**

रायपुर। योग गुरु बाबा रामदेव ने धर्मांतरण, धार्मिक भेदभाव, देश की अर्थव्यवस्था और पड़ोसी देशों में हिंदुओं की स्थिति को लेकर कई महत्वपूर्ण बातें कहीं। राजधानी रायपुर में पत्रकारों से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि सनातन संस्कृति और धर्म काफी पुराना है और इसमें ऐसी कोई कमी नहीं है, जिसके कारण लोगों को मुस्लिम या ईसाई बनने की जरूरत पड़े।

बाबा रामदेव ने कहा कि सनातन धर्म में कुछ ऐसे लोग जरूर हैं, जिनकी सोच में ऊंच-नीच और भेदभाव है, लेकिन इसे सनातन धर्म की कमी नहीं माना जा सकता। उन्होंने कहा कि लोगों को अपने जीवन में धर्म को धारण करना चाहिए। भगवान राम, कृष्ण, हनुमान और शिव के आदर्शों को जीवन में उतारने से धर्मांतरण का सवाल ही नहीं उठेगा।

धर्मांतरण को लेकर बाबा रामदेव ने कहा कि इतिहास में कुछ मुगल आए और लूटकर चले गए। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोगों ने अपने ही सनातनी भाइयों को लालच, तलवार, चमत्कार और भ्रातियां फैलाकर धर्म



बदलने के लिए मजबूर किया। उन्होंने कहा कि ईसाई धर्म में भी लोगों का धर्म परिवर्तन कराया गया, लेकिन समाज चुप रहा।

उन्होंने कहा कि

सनातन धर्म में कोई न्यूनता या अल्पता नहीं है। उनके मुताबिक, इस्लाम और ईसाइयत में भी कमियां हैं, लेकिन सनातन धर्म श्रेष्ठ है।

बाबा रामदेव ने कहा कि सतत तंत्र को धर्म तंत्र को मजबूत बनाने में सहयोग करना चाहिए, ताकि किसी तरह का षड्यंत्र न हो। उन्होंने धर्म, शिक्षा, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था और कृषि व्यवस्था को बेहतर बनाने पर जोर दिया। उनका कहना था कि इन क्षेत्रों में किसी तरह की गड़बड़ी नहीं होनी चाहिए और व्यवस्थाओं को लगातार उन्नत बनाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। तभी 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल किया जा सकेगा।

महबूबा मुफ्ती के ‘दिमागी नक्सली हूं’ वाले बयान को लेकर पूछे गए सवाल पर बाबा रामदेव ने कहा कि वह राजनीतिक बयानों के पच्चे में नहीं पड़ना चाहते। उन्होंने कहा कि कुछ लोग बौद्धिक दृष्टि से वितंडा और

अराजकता फैलाने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में हर व्यक्ति को अपनी बात कहने की आजादी है, लेकिन इस आजादी का इस्तेमाल देश की बर्बादी के लिए नहीं होना चाहिए। उन्होंने बौद्धिक अराजकता को ठीक नहीं बताया।

छत्तीसगढ़ में ईसाइयों को प्रताड़ित किए जाने के कांग्रेस के आरोपों पर भी बाबा रामदेव ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि कोई हिंदुओं पर ईसाइयों को प्रताड़ित करने का आरोप लगाता है और कोई कहता है कि ईसाइयों को प्रताड़ित किया जा रहा है, यह राजनीतिक वितंडा है। उन्होंने कहा कि वह इस विवाद में नहीं पड़ना चाहते।

बाबा रामदेव ने कहा कि देश में कुछ धार्मिक और मजहबी परिवर्तन पहले हो चुके हैं, लेकिन आगे किसी भी व्यक्ति को प्रताड़ित नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि न हिंदू धर्म खतरे में है, न मुस्लिम और न ही ईसाई धर्म।

उन्होंने धार्मिक मुद्दों के बजाय देश की आर्थिक मजबूती पर ध्यान देने की जरूरत बताई। बाबा रामदेव ने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था को श्रेष्ठ बनाने पर फोकस होना चाहिए और भारत का रुपया डॉलर के बराबर होना चाहिए।

निवासरत आम जनों के जन सुविधाओं से इन्हें कोई सरोकार नहीं है। तीसरे और चौथे रेल लाइन के निर्माण के बाद ट्रेनों की लेटलाईनी क्योें 3 अड़ानी का कोयला ढोने के लिये यात्री ट्रेनों को रोका जाता है। इस रिपोर्ट से यह साबित हो रहा है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि छत्तीसगढ़ के जेम पोर्टल को अवार्ड (सस्टेनेबल प्रोक्चोरमेंट अवार्ड) मिला है, जो जेम पोर्टल भ्रष्टाचार का केन्द्र बन गया है। जिसमें छत्तीसगढ़ के व्यापारियों निर्माताओ की उपेक्षा होती है, उसको अवार्ड मिलने पर आश्चर्य हो रहा है। लगता है 35000 का जग खरीदी, एक लाख दस हजार की टीवी खरीदी, रोटी मेकर मशीन 10 लाख में खरीदने, शिक्षा विभाग में कुर्सी, टेबल, अन्य सामग्री तीन से चार गुना महंगा खरीदने पर यह अवार्ड मिला है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा

कि दुर्भागवानापूर्वक गोठान बंद किए जाने से गाय सड़कों पर बेमौत मर रही, राहगीर दुर्घटना का शिकार हो रहे, किसान खुली चराई से परेशान। बीते 3 दिनों में बिलासपुर, रायपुर, कवर्धा में 27 गावों को सड़कों पर कुचलने की दु:खद घटनाएं सामने आयी, प्रदेश में सैकड़ों गायें और राहगीर इस दौरान सड़कों पर दुर्घटना का शिकार हुए। कांग्रेस की सरकार तो, हमने गायों की रक्षा के लिए गोठान बनाए, गोबर खरीदी शुरू किया, ताकि लोग गायों का पालन पोषण करे उनकी आय का जरिया बने भाजपा की डबल इंजन की सरकार तो गो वंश को कत्ल खाने भेज रही है, दुर्घटना और भूख से मौत की शिकार हो रही है। पिछले ढाई साल में 5 लाख पशुधन राज्य से गायब, 2 लाख से अधिक गौ वंशी पशु सड़कों पर है, 2500 की दुर्घटना में अकाल मौत हुई है, गौ हत्यारी है भाजपा सरकार।

‘दिमागी नक्सली’ शब्द पर हंगामा क्यों

अवधेश कुमार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 80वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से दिए संबोधन में देश के वर्तमान, भविष्य, विकसित भारत के लक्ष्य, विश्व व्यवस्था आदि पर इतने पहलू थे, जिन पर लंबे समय तक चर्चा हो सकती है। किंतु उनकी कुछ बातों पर जैसी तीखी प्रतिक्रिया और उबाल दिख रहा है, उस पर गौर करना आवश्यक है। सबसे ज्यादा प्रतिवाद उनके द्वारा ‘दिमागी नक्सली’ शब्द के इस्तेमाल पर हो रहा है। कांग्रेस के वरिष्ठनेता और पूर्व गृहमंत्री पी. चिदम्बरम ने यहां तक कह दिया कि, “मुझे दिमागी नक्सल होने पर गर्व है।” कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि प्रधानमंत्री पहले अपने विरोधियों को अर्बन नक्सल कहते थे और अब दिमागी नक्सल कह रहे हैं। उन्होंने यहभी कहा कि जिन मुद्दों को लेकर सरकार के विरोधियों को पहले अर्बन नक्सल या अब दिमागी नक्सल कहा जाता है, उनमें से कुछ मांगों या विचारोंको सरकार बाद में स्वीकार करती रही है। सोशल मीडिया पर जाएंगे तो भारी संख्या में लोग स्वयं को दिमागी नक्सली और न जाने क्या-क्या कह रहे हैं। यह स्थिति चिंता पैदा करने वाली है किंतु आश्चर्यजनक नहीं। पहले यह देखें कि आखिर प्रधानमंत्री ने कहा क्या? प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमें सावधान रहने की जरूरत है। हथियारबंद नक्सल तो गए लेकिन दिमागी नक्सल मौके की तलाश में हैं। समाज को गलत राह पर ले जाने के लिए तरह-तरह के काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, “ऐसे लोग हिंसा, अराजकता के रास्ते खोज रहे हैं। इन दिमागी नक्सलियों को पहचानना होगा। इन्हें युवाओं को भटकाने से बचाना होगा और इन्हें आइसोलेट करना होगा और विकसित राष्ट्र बनाने की ओर देश की युवा पीढ़ी को जोड़ना होगा।” यह भी सच है कि अब एक अन्य किस्म के झूठ द्वारा कृत्रिम असंतोष और हिंसक अराजकता पैदा करने की कोशिश लगातार चल रही है। उदाहरण के लिए हाल के कुछ आंदोलन देखिए। सरकार ने पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक रूप से उत्पीड़ित गैर मुसलमानों के लिए नागरिकता कानून में संशोधन किया तो उसके विरुद्ध दिल्ली के शाहीनबाग में धरना शुरू हुआ। देखते-देखते देश और दुनिया में इसका दुष्प्रचार हुआ। धरनास्थल सड़क पर स्थायी निर्माण कर दिए गए। अगर कोरीना संकट नहीं आता तो इनको हटाना मुश्किल था। इसके कारण हिंसा हुई और अंततः दिल्ली में दंगे तक हो गए। मुसलमानों और दूसरे तत्वों को भड़काया गया कि आपकी नागरिकता चली जाएगी। आज तक किसी की नागरिकता नहीं गई। साफ है कि इसके पीछे देश में हिंसक अराजकता ही पैदा करने की कोशिश थी। कृषि कानून विरोधी आंदोलन को देख लीजिए। उस आंदोलन में वास्तविक किसान भी थे लेकिन अराजक तत्व हावी रहे। दिल्ली को चारों ओर से घेरा गया। 26 जनवरी के दिन दिल्ली की सड़कों पर ट्रैक्टर ऐसे दौड़ रहे थे मानो हथियारबंद गाड़ियां हों। भारी संख्या में लोगों ने लाल किले पर चढ़कर पुलिस वालों को धक्के देकर नीचे गिराया। काफी संख्या में हमारे जवान घायल भी हुए। एक किसान नेता ने बाद में कहा कि थोड़ी गलती हो गई, संसद तक पहुंच जाते तो बंगलादेश उसी दिन दोहरा देते। आप इस प्रकार के विचार और व्यवहार को क्या कहेंगे? अभी हाल में कांसरोच जनाता पार्टी के बैनर से दिल्ली के जंतर मंतर पर धरना प्रदर्शन हुआ। वहां नारे क्या लग रहे थे? कोई आजादी के नारे लगा रहा था, कोई 370 हटाने का विरोध, कोई शरजिल इमाम के चिकन नैक को काटने का समर्थन कर रहा था तो कोई मेरा लिंग मेरा अधिकार तो कोई समलैंगिकता को लेकर झंडा उठाए हुए था। जिस तरह प्रधानमंत्री के लिए शब्दों का इस्तेमाल हुआ और जैसे पोस्टर दिखाए गए, उनसे शर्म से सिर झुक जाए।

पुराण दिग्दर्शन

विश्व विद्या-निरुपणाध्यायः (दशम अध्याय)

(गतांक से आगे...)

जो लोग किनारे की कंकड़ियों को देख कर या ऊपर तैरते हुवे ज्ञाग से घबड़ा कर हिम्मत हार बैठते हैं, वे मनुष्य उन अमूल्य मोतियों के अधिकारी नहीं हो सकते? उन्हें प्राप्त करने के लिये तो- जिन खोजा तिन पाइयों गहरे पानी पैठ वाली कहावत को चरितार्थ करने की आवश्यकता है।

इस लघु कलेवर पुस्तक में हम उन सभी मोतियों का भण्डार खोल दिखाएँ यह तो अति कठिन बात है, क्योंकि किसी वैज्ञानिक मत का निरूपण करने के लिये किसी भूमिका की और कितने उपसर्गों की आवश्यकता पड़ती है, यह केवल विज्ञानवेत्ता ही जान सकते हैं।

दूसरों के लिये तो- धरा फिलसफी में क्या लफजतराशी के सिवा। तथापि हम इस प्रघट्ट में कतिपय वैज्ञानिक सिद्धांतों के दिग्दर्शन का प्रयत्न अवश्य करेंगे।



ज्वार भाटा

आधुनिक विज्ञानवादियों का मत है कि चन्द्रमा के आकर्षण से समुद्र-जल बलियों उछाल मारने लग जाता है। यद्यपि पृथ्वी के निजल भाग पर भी आकर्षण का प्रभाव पड़ता है तथापि सूखे भाग के ठोस होने के कारण वह हमें प्रतीत नहीं होता। परन्तु जल तरल है इसलिये वह चन्द्रमा के आंकर्षण से खिंच जाता है।

वैज्ञानिक परिभाषा में इसे ज्वार-भाटा कहते हैं। विष्णुपुराण में भी यही बात बड़ी ही सरलता के साथ समझाई गई है, यथा-

स्थालीस्थमनिर्संयोगादुदित सलिलं यथा ।

तथैव वृद्धौ सलिलरम्भोऽथी मुनिसरमः॥ ॥

दशोत्तराणि पञ्चैव अंगुलीनां शतानि च।

अपां वृद्धिक्षयौ दृष्टौ सामुद्रीणां महामुने! ॥

(विष्णुपुराण 2। ६)

क्रमशः ...

ज्ञान/मीमांसा

अगर भारत-पाक युद्ध हुआ तो क्या भारत के खिलाफ अपनी सेना उतारेंगे तुर्किये और सउदी अरब?

नीरज कुमार दुबे

नाटो के भीतर जब अमेरिका और उसके सहयोगियों के बीच भरोसे की दरारें गहरी हो रही हैं, ठीक उसी समय पश्चिम एशिया में एक नया शक्ति-केंद्र खड़ा करने की कोशिश शुरू हो गई है। मक्का में तुर्किये, सऊदी अरब और पाकिस्तान ने ऐसा रक्षा समझौता किया है, जिसकी सबसे अहम लाइन में साफ कहा गया है कि तीनों में से किसी एक पर हमला हुआ तो उसे तीनों पर हमला माना जाएगा। यही वह बिंदु है, जो इस समझौते को सामान्य सैन्य सहयोग से उठाकर एक संभावित नए क्षेत्रीय सुरक्षा गठबंधन में बदल देता है। हालांकि इसे अभी आधिकारिक तौर पर ‘सुन्नी नाटो’ कहना जल्दबाजी होगी, लेकिन इसके भीतर उसकी बुनियादी तस्वीर जरूर दिखाई देने लगी है।

देखा जाये तो मक्का में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहाबाज शरीफ, सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान और तुर्किये के राष्ट्रपति रेचेप तैयप एर्दोगन का एक मंच पर आना अपने आप में बड़ा संदेश है। खास बात यह है कि यह समझौता ऐसे समय हुआ है जब पश्चिम एशिया पहले ही ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव की आग में झूलस रहा है। सऊदी अरब पर ईरान और उसके सहयोगी संगठनों के हमलों का खतरा है। पाकिस्तान अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों से जूझ रहा है और तुर्किये पश्चिम एशिया में अपनी भूमिका लगातार बढ़ा रहा है। यानी तीनों देश एक-दूसरे की जरूरत बन गए हैं।

वर्तमान हालात को देखें तो सऊदी को चाहिए सुरक्षा, पाकिस्तान को पैसा और तुर्किये को ताकत, इसलिए तीनों एक साथ आ गये हैं। हालांकि इस गठजोड़ को समझने के लिए तीनों देशों के हितों को अलग-अलग देखना होगा। सबसे पहले सऊदी अरब की बात करें तो उसके सामने सबसे बड़ा सवाल सुरक्षा का है। दशकों तक रियाद ने अमेरिकी सुरक्षा छाते पर भरोसा किया। लेकिन अब सऊदी नेतृत्व यह मानकर चल रहा है कि बदलती अमेरिकी नीति में किसी एक बाहरी शक्ति पर पूरी तरह निर्भर रहना जोखिम भरा हो सकता है। ईरान और उसके सहयोगियों की मिसाइल-तथा-ड्रोन क्षमता ने इस



खतरे को और वास्तविक बना दिया है।

ऐसे में सऊदी अरब ने अपना सुरक्षा कवच चौड़ा करना शुरू किया है। पाकिस्तान उसके लिए स्वाभाविक साझेदार है। पाकिस्तानी सेना दशकों से सऊदी सुरक्षा बलों को प्रशिक्षण देती रही है और हाल के महीनों में पाकिस्तान ने सऊदी अरब में सैनिकों, लड़ाकू विमानों, ड्रोन और वायु रक्षा प्रणालियों की मौजूदगी भी बढ़ाई है। वहीं पाकिस्तान की जरूरत बिल्कुल दूसरी है। आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान को सऊदी अरब से निवेश और आर्थिक मदद चाहिए, जबकि तुर्किये से रक्षा तकनीक और सैन्य सहयोग चाहिए। बदले में पाकिस्तान अपनी सेना और परमाणु क्षमता को मुस्लिम दुनिया की सुरक्षा में सबसे बड़ा सैन्य योगदान बताकर अपनी भू-राजनीतिक अहमियत बढ़ाना चाहता है।

वहीं तुर्किये की बात करें तो एर्दोगन लंबे समय से अपने देश को सिर्फ नाटो का सदस्य नहीं, बल्कि मुस्लिम दुनिया की एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। तुर्किये के पास अत्याधुनिक ड्रोन, रक्षा उद्योग और बड़ी सैन्य ताकत है। पाकिस्तान के साथ उसका रक्षा सहयोग पहले ही तेजी से बढ़ चुका है।अब सवाल उठता है कि यह गठबंधन किसके खिलाफ है? इस सवाल का जवाब हालांकि तीनों देशों ने नहीं में दिया है। तुर्किये ने साफ कहा है कि समझौता रक्षात्मक है, यह किसी खास देश या संगठन को निशाना नहीं बनाता और दूसरे क्षेत्रीय देशों के लिए भी खुला है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सिर्फ दस्तावेज की भाषा नहीं देखी जाती, टाइमिंग भी

बाजीराव पेशवा प्रथम

बाजीराव का जन्म 18 अगस्त 1700 को हुआ था। उनके पिता का नाम बलाजी विश्वनाथ था, जो मराठा साम्राज्य के पहले पेशवा बने। पाँ का नाम राधाबाई था। बचपन से ही बाजीराव अत्यंत पराक्रमी, साहसी और युद्ध-कौशल में निपुण थे। मात्र 20 वर्ष की आयु में, पिता के निधन के बाद, उन्हें छत्रपति शाहू महाराज ने मराठा साम्राज्य का पेशवा नियुक्त किया। इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी जिम्मेदारी मिलना ही यह सिद्ध करता है कि वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे।

बाजीराव को भारतीय इतिहास के महानतम सेनानायकों में गिना जाता है। उनका युद्ध सूत्र वाक्य था- जो थल-युद्ध में तेजु है, वही विजय प्राप्त करता है। उन्होंने सदैव तेजु गति, अचानक आक्रमण और शत्रु को संभलने का अवसर न देने की रणनीति अपनाई। उनकी सेना विशेष रूप से घुड़सवार दस्तों के लिए प्रसिद्ध थी। कहा जाता है कि उनकी टुकड़ियाँ 50-60 किलोमीटर प्रतिदिन की दूरी तय करती थीं, जो उस समय किसी भी सेना के लिए असंभव सा था।

उनकी रणनीति थी- जहाँ

दुश्मन की उम्मीद न हो, वहाँ प्रहार करो। यही कारण था कि उनके जीवनकाल में उन्होंने एक भी युद्ध नहीं हारा।

बाजीराव ने मराठा साम्राज्य को केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि उत्तर भारत तक इसका विस्तार किया। बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल बुंदेला को मुगलों और बंगश नवाब से मुक्ति दिलाने में बाजीराव ने अहम भूमिका निभाई। छत्रसाल ने कृवज्ञाता स्वरूप बाजीराव को भूमि और संसाधन भेंट किए।



उनकी रणनीति थी-

जहाँ

दुश्मन की उम्मीद न हो, वहाँ

प्रहार करो।

यही कारण था कि उनके जीवनकाल में

उन्होंने एक भी युद्ध नहीं हारा।

बाजीराव ने मराठा साम्राज्य को केवल

महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि

उत्तर भारत तक इसका विस्तार किया।

बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल बुंदेला को

मुगलों और बंगश नवाब से मुक्ति दिलाने में

बाजीराव ने अहम भूमिका निभाई।

छत्रसाल ने कृवज्ञाता स्वरूप बाजीराव को

भूमि और संसाधन भेंट किए।

1737 में बाजीराव ने मात्र 25,000 सैनिकों के साथ दिल्ली पर चढ़ाई की और मुगलों को दिखा दिया कि मराठा साम्राज्य अब उत्तर भारत की राजनीति में सबसे बड़ी शक्ति है। उनकी इस सफलता ने मुगलों की कमर तोड़ दी।

बाजीराव ने हैदराबाद के निज़ाम को कई बार पराजित किया। निज़ाम के साथ उनकी प्रतिद्वंद्विता प्रसिद्ध रही। एक बार जब निजाम ने मराठों को चुनौती दी, तो बाजीराव ने नासिक के पास पालखेड़ की लड़ाई (1728) में उसे करारी शिकस्त दी। यह युद्ध उनकी असाधारण रणनीति का उत्कृष्ट उदाहरण है।

बाजीराव केवल योद्धा ही नहीं, बल्कि दूरदर्शी प्रशासक भी थे। उनका मानना था कि मराठा साम्राज्य को केवल दक्षिण तक

सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि सम्पूर्ण भारत में फैलाना चाहिए। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने उत्तर भारत तक अपने अभियान चलाए। उनका व्यक्तित्व तेजस्वी, निर्णायक और अत्यंत प्रेरणादायी था। वे सैनिकों के प्रिय नेता थे क्योंकि वे सदैव उनकी कठिनाइयों और सुख-दुख में साथ खड़े रहते थे। बाजीराव को मराठा चील कहा जाता है, क्योंकि वे बिजली की गति से आक्रमण करते थे और दुश्मन को सँभलने का समय ही नहीं मिलता था। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने मराठा साम्राज्य को उस समय भारत की प्रमुख शक्ति बना दिया, जब मुगल साम्राज्य धीरे-धीरे कमजोर हो रहा था।

इतिहासकार कहते हैं - भारत में नादिरशाह आया, लेकिन दिल्ली को लूटने से पहले यदि कोई उसे रोक सकता था, तो वह केवल पेशवा बाजीराव थे।

तालिबान के 5 साल के राज में कितना बदला अफगानिस्तान?

नीरज कुमार दुबे

भले ही दुनिया ने तालिबान को औपचारिक मान्यता देने से अब तक परहेज किया हो, लेकिन पांच साल में इस संगठन ने एक बात साबित कर दी है कि सत्ता पर कब्जे के बाद राजनय की ताकत को हथियार की तरह इस्तेमाल करना उसे आता है। 15 अगस्त 2021 को अमेरिकी नेतृत्व वाली नाटो सेनाओं की वापसी के बाद काबुल पर कब्जा करने वाला तालिबान आज उस मुकाम पर है जहां कई देश उसे पसंद नहीं करने के बावजूद उससे बात कर रहे हैं, उसके साथ सौदे कर रहे हैं और क्षेत्रीय सुरक्षा से लेकर व्यापार तक के सवालों पर उसे नजरअंदाज नहीं कर सकते।

इस बदलते समीकरण का सबसे बड़ा संकेत भारत है। 15 अगस्त को तालिबान ‘विकट्री डे’ मनाये जा रहा है और नई दिल्ली स्थित अफगान दूतावास में होने वाले समारोह में वरिष्ठ भारतीय अधिकारियों की संभावित भागीदारी को लेकर भी संकेत मिले हैं। निमंत्रण अफगानिस्तान के चार्ज द अफेयर्स मुफ्ती नूर अहमद नूर की ओर से बीजा गया है और उस पर ‘इस्लामिक अमीरात ऑफ अफगानिस्तान’ का प्रतीक चिह्न है। भारत ने तालिबान सरकार को औपचारिक मान्यता नहीं दी है, लेकिन उसे अफगान दूतावास संचालित करने की अनुमति देकर और उसके राजनयिकों को काम करने की जगह देकर उसने साफ कर दिया है कि कूटनीति में ‘मान्यता’ और ‘व्यावहारिक संबंध’ दो अलग चीजें हैं।

देखा जाये तो तालिबान का पांच साल का राज हालात में कोई अहम बदलाव नहीं कर पाया है। आम अफगान की ज़िंदगी आर्थिक, सामाजिक और मानवीय संकटों से अब भी घिरी है। क़रीब आधी आबादी गरीबी में है, बेरोजगारी दर बहुत ज्यादा है, निवेश नहीं है और महिलाओं को कामकाज से लगभग बाहर कर दिया गया है। हां, कर संग्रह में सुधार हुआ है, भ्रष्टाचार में कुछ कमी आई है और देश के बड़े हिस्से में हिंसा पहले की तुलना में कम हुई है। लेकिन बदले में मनमानी गिरफ्तारियां, जबरन



गुमशुदगियां और प्रतिशोधात्मक कार्रवाई जैसी शिकायतें बनी हुई हैं।

तालिबान ने आर्थिक मोर्चे पर खनन और सीमा-पार बुनियादी ढांचे पर जोर बढ़ाया है। चीन और दूसरे पड़ोसी देशों की कंपनियां अफगानिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों में संभावनाएं तलाश रही हैं। मध्य एशिया के ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान, उज्बेकिस्तान और कजाखस्तान जैसे देश भी काबुल के साथ व्यापारिक गलियारों को लेकर सक्रिय हैं, क्योंकि समुद्र तक पहुंच बनाने के लिए अफगानिस्तान एक अहम भौगोलिक कड़ी बन सकता है। यही तालिबान की असली कूटनीतिक चाल है। यानि वह विचारधारा की बजाय भूगोल को बेच रहा है। वह कह रहा है कि उसे पसंद करें या न करें, लेकिन अफगानिस्तान की जमीन, खनिज, व्यापार मार्ग और सुरक्षा समीकरण से दुनिया बच नहीं सकती।

रूस फिलहाल तालिबान सरकार को औपचारिक मान्यता देने वाला अकेला देश है, लेकिन व्यवहार में तस्वीर इससे कहीं बड़ी है। चीन, जापान, तुर्किये, सऊदी अरब और ब्रिटेन समेत अनेक देशों के प्रतिनिधि काबुल पहुंच रहे हैं। यूरोपीय संघ के साथ असफल अफगान शरणार्थियों की वापसी पर बातचीत हो रही है और जर्मनी ने तालिबान की वापसी के बाद पहली बार ऐसे अफगान नागरिक को निर्वासित किया जिसे किसी अपराध में दोषी नहीं ठहराया गया था। साथ ही तालिबान ने समय को

अपना सबसे बड़ा हथियार बना लिया है। पांच साल गुजर चुके हैं। दुनिया को धीरे-धीरे यह कठोर वास्तविकता स्वीकार करनी पड़ रही है कि अफगानिस्तान पर वास्तविक नियंत्रण तालिबान का है। संयुक्त राष्ट्र से जुड़े विशेषज्ञों के मुताबिक, क्षेत्रीय देशों में यह सोच मजबूत हुई है कि यह ऐसी वास्तविकता है जिससे निपटना ‘अनिवार्य’ है, चाहे उसे पसंद किया जाए या नहीं।

भारत के लिए सबसे बड़ा रणनीतिक बदलाव तालिबान और पाकिस्तान के रिश्तों में आई दरार है। जिस पाकिस्तान को कभी तालिबान का संरक्षक और रणनीतिक साझेदार माना जाता था, वही आज काबुल के साथ खुले टकराव में है। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच संघर्ष इतना बढ़ा कि चीन, कतर, सऊदी अरब, ओमान, ईरान, तुर्किये, उज्बेकिस्तान और मलेशिया तक को हस्तक्षेप करना पड़ा। सैकड़ों नागरिकों की मौत के बाद चीन ने बातचीत की मेजबानी की।

यहीं पाकिस्तान के लिए सबसे बड़ा झटका है। तालिबान ने यह दिखा दिया कि काबुल की सत्ता अब इस्लामाबाद की जेब में नहीं है। बल्कि अफगान संप्रभुता और सीमा विवाद पर वह पाकिस्तान से भिड़ने को तैयार है। भारत के लिए यह किसी रणनीतिक बोनस से कम नहीं। पिछले वर्ष भारत और तालिबान के संयुक्त बयान में जम्मू-कश्मीर को भारत में स्थित केंद्रशासित प्रदेश के रूप में संदर्भित किया गया और पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की गई। पाकिस्तान के लिए इससे अधिक कड़वा कूटनीतिक संदेश शायद ही कुछ हो सकता था।

भारत ने अफगानिस्तान में अपने ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंधों को कभी पूरी तरह टूटने नहीं दिया। 34 में से सभी प्रांतों में 500 से अधिक विकास परियोजनाओं के जरिए बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और क्षमता निर्माण जैसे क्षेत्रों में उसकी मौजूदगी रही है। पिछले वर्ष काबुल में भारतीय दूतावास बहाल हुआ और

तालिबान के राजनयिकों को नई दिल्ली स्थित अफगान दूतावास में काम करने की अनुमति मिली। विदेश मंत्री अमीर खान मुनवी की भारत यात्रा ने इस रिश्ते को और गति दी।

जून में भारत ने संयुक्त राष्ट्र में यह संकेत भी दिया कि मौजूदा तालिबान प्रतिबंध व्यवस्था पर पुनर्विचार की जरूरत है। भारत के संयुक्त राष्ट्र प्रतिनिधि हरीश पार्वतनैनी ने कहा कि पांच वर्षों में अफगानिस्तान की राजनीतिक वास्तविकता बदल चुकी है और प्रतिबंध व्यवस्था को इस बदलाव को ध्यान में रखना चाहिए। लेकिन तालिबान की सबसे बड़ी कीमत अफगान महिलाएं चुका रही हैं।

इस पूरी कूटनीतिक सफलता के बीच तालिबान शासन का सबसे भयावह चेहरा महिलाओं और लड़कियों की ज़िंदगी में दिखाई देता है। पांच साल में 160 से अधिक आदेश महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा, रोजगार, आवाजाही, पहनावे, बोलने और निर्णय लेने के अधिकारों पर प्रतिबंध लगा चुके हैं। माध्यमिक और उच्च शिक्षा से लड़कियों का बाहर किया जाना अफगानिस्तान के भविष्य पर सीधे हमला है। संयुक्त राष्ट्र की महिला एजेंसी के अनुसार आधुनिक दौर में किसी अन्य देश ने कानून, नीति और व्यवहार के जरिए आधी आबादी के अधिकारों को इस पैमाने पर खत्म नहीं किया।

महिलाओं को संयुक्त राष्ट्र परिसर समेत कई जगहों से बाहर रखा गया है। अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय ने तालिबान के सर्वोच्च नेता हिबतुल्लाह अखुंदजादा और मुख्य न्यायाधीश अब्दुल हकीम हक़ाऩी के खिलाफ महिलाओं और लड़कियों के उत्पीड़न को मानवता के खिलाफ अपराध बताते हुए गिरफ्तारी वारंट भी जारी किए हैं। यही तालिबान की सबसे बड़ी विडंबना है कि बाहर की दुनिया से वह बातचीत के दरवाजे खोल रहा है, जबकि अपने ही देश की आधी आबादी के लिए दरवाजे बंद कर रहा है। भारत के लिए तालिबान के पांच साल का अर्थ न तो भावनात्मक दोस्ती है और न ही वैचारिक समर्थन। यह कठोर रणनीतिक यथार्थवाद है।

1737 में बाजीराव ने मात्र 25,000 सैनिकों के साथ दिल्ली पर चढ़ाई की और मुगलों को दिखा दिया कि मराठा साम्राज्य अब उत्तर भारत की राजनीति में सबसे बड़ी शक्ति है। उनकी इस सफलता ने मुगलों की कमर तोड़ दी।
बाजीराव ने हैदराबाद के निज़ाम को कई बार पराजित किया। निज़ाम के साथ उनकी प्रतिद्वंद्विता प्रसिद्ध रही। एक बार जब निजाम ने मराठों को चुनौती दी, तो बाजीराव ने नासिक के पास पालखेड़ की लड़ाई (1728) में उसे करारी शिकस्त दी। यह युद्ध उनकी असाधारण रणनीति का उत्कृष्ट उदाहरण है।
बाजीराव केवल योद्धा ही नहीं, बल्कि दूरदर्शी प्रशासक भी थे। उनका मानना था कि मराठा साम्राज्य को केवल दक्षिण तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि सम्पूर्ण भारत में फैलाना चाहिए। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने उत्तर भारत तक अपने अभियान चलाए। उनका व्यक्तित्व तेजस्वी, निर्णायक और अत्यंत प्रेरणादायी था। वे सैनिकों के प्रिय नेता थे क्योंकि वे सदैव उनकी कठिनाइयों और सुख-दुख में साथ खड़े रहते थे। बाजीराव को मराठा चील कहा जाता है, क्योंकि वे बिजली की गति से आक्रमण करते थे और दुश्मन को सँभलने का समय ही नहीं मिलता था। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने मराठा साम्राज्य को उस समय भारत की प्रमुख शक्ति बना दिया, जब मुगल साम्राज्य धीरे-धीरे कमजोर हो रहा था।
इतिहासकार कहते हैं - भारत में नादिरशाह आया, लेकिन दिल्ली को लूटने से पहले यदि कोई उसे रोक सकता था, तो वह केवल पेशवा बाजीराव थे।

आज का इतिहास

1227 मंगोल साम्राज्य के शासक चंगेज खान का निधन।
1700 मराठा साम्राज्य के महान् सेनानायक बाजीराव प्रथम का जन्म।
1800 लार्ड वेलेजली ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
1868 फ्रांस के खगोलविद पियरे जेनसीन ने हिलियम की खोज की।
1891 कैरेबियाई द्वीप मार्टिनीक्यु में चक्रवाती तूफान से 700 की मौत।
1900 पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित का जन्म।
1920 अमेरिका में महिलाओं को वोटिंग का अधिकार मिला।
1936 प्रसिद्ध गीतकार, कवि और फ़िल्म निर्देशक गुलज़ार का जन्म।
1940 पहली बार मौसम मानचित्र का टेलीविजन पर प्रसारण।
1949 हंगरी ने संविधान अंगीकार किया।
1945 सुकर्णो ने इंडोनेशिया के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में कामकाज शुरू की।
1945 महान स्वतन्त्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस का निधन।
1951 पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में भारतीय प्रोग्रेोगिकी संस्थान की स्थापना।
1959 भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण का जन्म।
1963 अमेरिका में जेम्स मेरीडिथ मिसिसीपी विश्वविद्यालय से स्नातक करने वाला पहला अश्वेत व्यक्ति।
1982 सोवियत संघ द्वारा एक महिला अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष स्टेशन सेल्युट-7 के लिए भेजी गई।
1999 तुर्की में भूकम्प से लगभग 45000 लोगों की मौत।
2000 इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज को हराकर दो दिन में टेस्ट जीतने का इतिहास रचा।
2006 बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति एच.एम. इरशाद को विशेष अदालत ने भ्रष्टाचार में मामले में बरी किया।
2007 विवादोत्पद ब्रिटिश गायिका लिली एलेन के अमेरिका में घुसने पर प्रतिबन्ध लगा।
2008 उत्तर प्रदेश में मायावती सरकार ने छठे वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा की।
2008 पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने महाभियोग की आशंका के बीच इस्तीफा दिया।
2012 नाटो के हवाई हमले में अफ़्ग़ानिस्तान के कम से कम 13 आतंकवादियों की मौत।
2013 पश्चिम बंगाल में एक बस में बम विस्फोट में छह लोगों की मौत।
2018 संयुक्त राष्ट्र संघ के सातवें महासचिव कोफ़ी अन्नान का निधन।

भारतीय परंपराओं में निहित है संवाद, संवाद से ही होता है समाधान

प्रज्ञा पांडेय

हाल ही में संघ प्रमुख श्री मोहन भागवत ने जेन जी से बातचीत की पहल की, इस प्रकार का संवाद नया नहीं हैं बल्कि हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा का हिस्सा रहा है जो जीवन से जुड़ी सत्य को उजागर करता है।

आज की युवा हमारी पीढ़ी जैसी नहीं बल्कि उससे थोड़ी अलग है वह आदेश नहीं, बल्कि तर्क, प्रश्न और संवाद चाहती है। जेन जी तर्क तो करते हैं लेकिन उसके साथ ही ये भारतीय संस्कृति, परिवार, सामाजिक उत्तरदायित्व और वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे मूल्यों का भी सम्मान करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संवाद का सर्वोच्च स्थान है। यहां गुरु शिष्य पर अपनी बात थोपता नहीं, बल्कि प्रश्नों के द्वारा उसकी शंका का समाधान कर उसे निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस प्रकार उदाहरणों में नचिकेताङ्ग्यम संवाद और श्रीकृष्णङ्कअर्जुन संवाद विशेष रूप से विख्यात है। नेता-छात्र संवाद भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग रहा है। हमारी भारतीय

ज्ञान परंपरा में देश के नेतृत्वकर्ताओं, सम्राटों, ऋषियों, गुरुओं एवं युवा शिष्यों, छात्रों के मध्य संवाद को समाज के निर्माण का मुख्य आधार माना गया है।

जेन-जी के साथ डिक्शनशन के बजाय डिस्कशन को प्राथमिकता देते हुए संघ प्रमुख ने संवाद का मार्ग चुना। यह पहल न केवल युवा पीढ़ी के विचारों, प्रश्नों और आकांक्षाओं को समझने की आवश्यकता को रेखांकित करती है, बल्कि भारत की उस प्राचीन संवाद-परंपरा की पुनर्प्रतिष्ठा भी करती है, जिसमें संवाद को सामाजिक जीवन का आधार माना गया है। आज जब भारत विकसित राष्ट्र की दिशा में आगे बढ़ रहा है, युवाओं के साथ संवाद की यह परंपरा उनके ऊर्जा, नवाचार और दृष्टि को राष्ट्र-निर्माण से जोड़ने में महती भूमिका निभा सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संवाद केवल वार्तालाप नहीं है, अपितु सत्य की खोज, आपसी मतभेदों का समाधान एवं ज्ञान के आदान-प्रदान का जरिया रहा है। उपनिषदों में वर्णित गुरु-शिष्य के मध्य संवाद, भगवद्गीता



में श्रीकृष्ण एवं अर्जुन का संवाद तथा बौद्ध-जेन परंपराओं की शास्त्रार्थ परंपरा इसका अनोखा उदाहरण है जो हमें दो पीढ़ियों की बीच हुए संवाद की महत्ता बताते हैं। हमारी भारतीय परंपरा का मूल मंत्र है वादे वादे जायते तत्त्वबोधः, अर्थात संवाद से ही सत्य का बोध होता है। मोहन भागवत का जेन जी से संवाद इसी परंपरा को वर्तमान में आगे बढ़ाने का प्रयास है, जिसमें युवाओं के साथ सम्मानपूर्ण, तर्कपूर्ण और खुले संवाद के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों

को जोड़ने की बात कही गई है।

नचिकेताङ्ग्यम संवाद भारतीय ज्ञान परंपरा में एक प्रमुख संवाद है। नचिकेता की उम्र आज की जेन अल्फा पीढ़ी के बराबर की थी जब बालक नचिकेता एवं यमराज के मध्य संवाद के द्वारा आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष और जीवन के सत्य पर विस्तृत बातचीत हुई। इस संवाद की विशेषता यह रही है कि यहां गुरु ने प्रश्न पूछने से नहीं रोका बल्कि जिज्ञासा का सम्मान किया, तर्क एवं विवेचन द्वारा विश्लेषण कर उत्तर दिया। सत्य को कुत्रिम न कर उसे स्वयं समझने का अवसर प्रदान किया।

इसी प्रकार कर्षुक्षेत्र की रणभूमि में श्रीकृष्ण एवं अर्जुन का संवाद भारतीय ज्ञान परंपरा में जीवन से जुड़े सत्यों का विश्लेषण करने में विशेष महत्ता रखता है। गीता के उपदेश के उपरांत श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि सभी तथ्यों पर विचार कर अपनी इच्छानुसार सब कुछ करो। यह भारतीय संवाद परंपरा का सर्वोच्च आदर्श है। इसमें श्रीकृष्ण ने निर्णय अर्जुन पर छोड़ दिया। उन्हें ज्ञान

दिया, तर्क दिया, मार्गदर्शन दिया, परंतु निर्णय की स्वतंत्रता लेने की स्वतंत्रता नहीं छीनी। इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया। विमृश्यैतदशेषण यथेच्छसि तथा कुरु॥ (गीता 18.63)

प्रश्न पूछना दोष नहीं, ज्ञान का प्रारंभ है। गुरु का कार्य आदेश देना नहीं, मार्गदर्शन करना है। संवाद का उद्देश्य किसी पर विचार थोपना नहीं, सत्य का बोध कराना है। अंतिम निर्णय व्यक्ति की विवेकपूर्ण स्वतंत्रता पर छोड़ा जाता है। इसी कारण नचिकेताङ्ग्यम संवाद और श्रीकृष्णङ्कअर्जुन संवाद भारतीय ज्ञान परंपरा में आदर्श माने जाते हैं। आज के संदर्भ में भी जब युवाओं से संवाद की बात होती है, तो उसका आशय यही है कि उनकी जिज्ञासाओं का सम्मान किया जाए, तर्कपूर्ण चर्चा हो और उन्हें सोच-समझकर स्वयं निर्णय लेने का अवसर दिया जाए।

इसके अलावा चाणक्य एवं चंद्रगुप्त का संवाद भी भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां चाणक्य एक दूरदर्शी शिक्षक और नेता के रूप में युवा छात्र चंद्रगुप्त का

मार्गदर्शन कर उन्हें अखंड भारत का सम्राट बनाया। विवेकानंद भी हमेशा युवाओं से सीधा संवाद करते थे ताकि उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत हो और वह राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

हमारी भारतीय संस्कृति में संवाद अर्थहीन नहीं है अपितु अपने अंदर महत्वपूर्ण मूल्यों को समाहित किए हुए। इनमें विनय एवं बड़ों के प्रति सम्मान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हमारी भारतीय संस्कृति छात्रों को हमेशा विनयशीलता एवं गुरुजनों के प्रति आदर करना सीखाती है। साथ ही अपने गुरुजनों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनना छात्रों का गुण माना जाता है। यह संवाद कभी अर्थहीन नहीं होते। इनका उद्देश्य किसी को हराना नहीं, बल्कि सत्य और सही मार्ग को खोजना होता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित संवादों के अपने लोकतांत्रिक मूल्य हैं। संवाद के परंपरागत मार्ग हमारे लोकतंत्र और जीवंत होता है। वर्तमान के युवा ही भविष्य के नेता होंगे, यह संवाद उन्हें इस जिम्मेदारी का अहसास कराता है।

पंजाब चुनाव 2027 से पहले भाजपा अकाली दल की राहें जुदा

आदिति फडणीस

बात सिर्फ इतनी नहीं थी कि कितनी तेजी से इनकार किया गया, बल्कि यह भी थी कि वह कितनी स्पष्टता से किया गया। शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर बादल के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने के कुछ ही घंटों बाद, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने घोषणा की कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पंजाब विधान सभा चुनाव के लिए शिरोमणि अकाली दल के साथ गठबंधन नहीं करेगी। इसके बाद भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष केवल सिंह दिह्लों ने बयान दिया कि भाजपा 2027 का विधान सभा चुनाव अकेले लड़ेगी। राज्य विधान सभा की 117 सीटों के लिए चुनाव अगले साल फरवरी में होंगे। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि गठबंधन बनने से पहले ही खत्म हो गया है। कुछ महीने पहले पंजाब में हुए नगर निगम चुनावों के नतीजों को देखें तो इसका मतलब है कि ज्यादातर निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा और शिरोमणि अकाली दल तीसरे और चौथे स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी। जानिए क्यों। वर्ष 1996 में मोगा घोषणापत्र में भाजपा और शिरोमणि अकाली दल के बीच बिना शर्त गठबंधन की बात कही गई। उसमें गठबंधन के आधार के रूप में सिख, हिंदू, दलित या मुस्लिम पहचान के बजाय ‘पंजाबियत’ पर जोर दिया गया। यह साझेदारी पंजाब के सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक गठबंधनों में से एक बन गई, जिसमें दोनों दलों ने लगभग दो दशकों से अधिक समय तक साथ मिलकर काम किया। दोनों दल एक साझा प्रतिद्वंद्वी, कांग्रेस के खिलाफ एकजुट हुए थे। हालांकि, जब सितंबर 2020 में कृषि कानूनों के मुद्दे पर शिरोमणि अकाली दल गठबंधन से बाहर हो गया, तो दोनों पक्षों को अच्छे समय की नहीं, बुरे समय की याद आई। साथ मिलकर, वे एक विजयी टीम थे, भले ही वे एक-दूसरे से असहमत होते थे, जो अक्सर होता था। लेकिन अलग-अलग, वे हर चुनाव हारते रहे। पंजाब में भाजपा के भीतर यह प्रबल मत है कि पार्टी को अब अपने दम पर खड़ा होना चाहिए और बुरी तरह से समझौता कर चुकी

शिरोमणि अकाली दल का साथ त्याग देना चाहिए। इसे बल देने के लिए पार्टी सिखों तक पहुंचने के प्रयास में एक ऐसी नीति अपना रही है जिसे कुछ हद तक अतिरंजित प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने हालिया सार्वजनिक संबोधन में सिख समुदाय के लिए सरकार की पहलों का उल्लेख किया: अफगानिस्तान से श्री गुरु ग्रंथ साहिब स्वरूपों की वापसी, तख्त श्री पटना साहिब में गुरु गोविंद सिंह और माता साहिब कौर के 300 साल पुराने पवित्र जूते (जोड़े साहिब) की स्थापना, हेमकुंड साहिब रोपवे का निर्माण, स्वर्ण मंदिर के लिए विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) के तहत विदेशी चंदे को मंजूरी देना और चार साहिबजादों की वीरता और शहादत को सम्मान देने के लिए 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के रूप में स्थापित करना। लेकिन इसमें राजनीतिक संकेत भी है: ‘वारिस पंजाब दे’ के दो उम्मीदवारों ने खड्ग साहिब और फरीदकोट से 2024 का लोक सभा चुनाव जीता। दोनों ही खालिस्तान का खुलकर और निडर रूप से समर्थन करते रहे हैं। अब वारिस पंजाब दे ने विधान सभा चुनावों के लिए कम से कम पांच उम्मीदवारों की घोषणा की है, जिनमें से कई जेल में बंद हैं। अजनाला, मोगा, कपूरथला, कोटकापुरा, बस्सी पठाना और गिल निर्वाचन क्षेत्रों से उम्मीदवार किसी सरकारी रोकटोक के बिना अलगाववादी विचारधारा का समर्थन करेंगे। इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि इसका शिरोमणि अकाली दल पर क्या प्रभाव पड़ेगा। लंबे समय से उदारवादी माने जाने वाली इस पार्टी के लिए यह एक बड़ा झटका है, जिससे उग्र अकालियों के लिए जगह बन जाएगी। पंजाब में उग्रवाद सीधे तौर पर दिखाई नहीं देता, लेकिन यह सतह के ठीक नीचे मंडराता रहता है। भाजपा का मानना ​​है कि हिंदू आबादी पहले से ही पार्टी के साथ है। लेकिन पंजाबी हिंदू सिख भी हैं और ग्रामीण पंजाबी सिख हिंदू भी हैं। इसके अलावा, पंजाबी हिंदू आर्य समाजी हैं, सनातनी नहीं।

पाकिस्तानी स्वतंत्रता दिवस पर शहबाज की गीदड़ भभकी

नीरज कुमार दुबे

पाकिस्तान आज यानि 14 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मना रहा है, लेकिन प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के सामने सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि वह खुलकर जश्न कैसे मनाएँ क्योंकि उनके देश में चारों ओर से चुनौतियां बढ़ती ही जा रही हैं। पाकिस्तान के हालात इस समय ऐसे हैं कि आर्थिक, कूटनीतिक और सामाजिक तौर पर विफल हो चुके देश में आजादी का जश्न सरकार भले मना रही है लेकिन आम जनता त्राहि त्राहि कर रही है। ऐसे में जनता को उम्मीदें देने की बजाय प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने एक बार फिर भारत के खिलाफ खोखली धमकियों का ऐलान कर अवाक का ध्यान भटकाने का प्रयास किया है। हम आपको बता दें कि शहबाज शरीफ ने भारत को निशाना बनाते हुए पानी के मुद्दे पर ‘सीधा जवाब’ देने की धमकी दी है। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर उनका यह बयान पाकिस्तान की पुरानी भारत विरोधी राजनीति की याद दिलाता है, जहां घर के बिगड़ते हालात से ध्यान हटाने के लिए भारत के खिलाफ बयानबाजी को हथियार बनाया जाता है।

शहबाज शरीफ ने कहा कि सिंधु नदी के पानी की ‘हर बूंद’ पाकिस्तान की रेड लाइन है और अगर भारत ‘सही रास्ते’ पर नहीं आया तो उसे सीधा जवाब दिया जाएगा। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि पाकिस्तान की संप्रभुता और सुरक्षा को चुनौती मिली तो मई 2025 की सैन्य झड़प से भी कड़ा जवाब दिया जाएगा। यानी अपने नागरिकों के सवालों का जवाब देने की बजाय इस्लामाबाद फिर दिल्ली को गीदड़ भभकी देकर अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहता है।

विडंबना देखिए कि जिस पाकिस्तान के प्रधानमंत्री भारत को ‘शांति का दुश्मन’ बता रहे हैं, उसी पाकिस्तान के भीतर शांति और स्थिरता का संकट गहराता जा रहा है। बलूचिस्तान में पाकिस्तान की सत्ता के खिलाफ अवसोप इतना बढ़ा है कि स्वतंत्रता दिवस को ‘ब्लैक डे’ के रूप में मनाने की अपील तक सामने आई है। बलूच नेताओं ने काले झंडे और काली पट्टियां लगाई हैं। सुराब क्षेत्र में पाकिस्तानी सैन्य कार्रवाई में नागरिकों के हताहत होने से असंतोष और भड़का गया



है।

बलूच कार्यकर्ताओं के मुताबिक सैन्य कार्रवाई में बच्चों समेत बड़ी संख्या में नागरिक मारे गए या घायल हुए। मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने आबादी वाले इलाकों में हवाई हमलों और नागरिकों की मौत पर सवाल उठाए हैं। बलूचिस्तान और इस्लामाबाद के बीच अविश्वास की खाई बेहद गहरी हो चुकी है। जिस देश का एक हिस्सा उसके स्वतंत्रता दिवस को ही ‘ब्लैक डे’ कह रहा हो, उसके प्रधानमंत्री का भारत को धमकाना खोखली ताकत का प्रदर्शन ही अधिक लगता है।

यही नहीं, पश्चिमोत्तर पाकिस्तान का हाल भी शरीफ सरकार के दावों की पोल खोलता है। खैबर पख्तूनख्वा में स्वात के कबाल पुलिस स्टेशन के पास आत्मघाती हमले में 17 लोगों की मौत और 27 के घायल होने की खबर सामने आई है। मृतकों में सात पुलिसकर्मी भी शामिल थे। हमला उस समय हुआ जब लोग क्षेत्र की बिगड़ती कानून-व्यवस्था के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। यानी पाकिस्तान अपने ही शहरों में आतंक और असुरक्षा से जूझ रहा है और फिर भी उसकी सत्ता को भारत के खिलाफ बयानबाजी में राजनीतिक लाभ दिखाई देता है।

पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर भी बेचैनी से गुजर रहा है। वहां राजनीतिक प्रतिनिधित्व और अन्य मांगों को लेकर विरोध प्रदर्शनों, झड़पों, बल प्रयोग, इंटरनेट बंदी और हालिया विधानसभा चुनावों की निष्पक्षता को लेकर गंभीर सवाल उठे हैं। रावलकोट में सुरक्षा बलों की गोलीबारी में लोगों के घायल होने

की बात भी सामने आई। भारत के विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान पर मानवाधिकार उल्लंघनों के लिए अंतरराष्ट्रीय जवाबदेही की मांग करते हुए कहा है कि असंतोष का जवाब ‘गोलियों, ब्लैकआउट और दमन’ से दिया गया।

वहीं राजनीतिक मोर्चों पर भी पाकिस्तान की हालत कम विस्फोटक नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान जेल में हैं और उनके बेटों ने आरोप लगाया है कि परिवार, डॉक्टरों और वकीलों को सात महीने से उनसे मिलने की अनुमति नहीं दी गई। इमरान खान और उनके समर्थक लंबे समय से अपने खिलाफ मामलों को राजनीतिक रूप से प्रेरित बताते रहे हैं। विपक्ष के सबसे प्रमुख चेहरे की लगातार कैद और उनकी पार्टी पर कार्रवाई ने पाकिस्तान की लोकतांत्रिक साख पर भी गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

ऐसे में शहबाज शरीफ की ‘हर बूंद रेड लाइन’ वाली धमकी पाकिस्तान की शक्ति का प्रमाण कम और उसकी बेचैनी का संकेत ज्यादा है। पाकिस्तान को समझना होगा कि बलूचिस्तान में असंतोष, खैबर पख्तूनख्वा में आतंक, पीओजेके में विरोध, राजनीतिक दमन के आरोप और आर्थिक-सामाजिक दबाव, इन सबका समाधान भारत को धमकी देने से नहीं होगा।

उधर, नई दिल्ली का संदेश सीधा है कि आतंकवाद और बातचीत साथ-साथ नहीं चल सकते। भारत का स्पष्ट रुख है कि सीमा पार आतंकवाद को पाकिस्तान जब तक विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय तरीके से बंद नहीं करता, तब तक सौंध अपने पुराने स्वरूप में नहीं चले सकते। पाकिस्तान को यह भी समझना होगा कि धमकियों से भारत की नीति नहीं बदलेगी। पाकिस्तान को पहले अपने घर की आग बुझानी होगी, अपने नागरिकों को सुरक्षा देनी होगी और सीमा पार आतंकवाद पर निर्णायक कार्रवाई करनी होगी। वरना स्वतंत्रता दिवस के मंच से दी गई उसकी दहाड़ इतिहास में ताकत की आवाज नहीं, एक ऐसे देश की खोखली हुंकार के रूप में दर्ज होगी जो अपने भीतर की दरारों से आंखें चुराकर भारत को डराने की कोशिश कर रहा है।



tive target" हो सकते हैं। यानी आतंकियों की गणित कुछ ऐसी होती है- सामान्य दिन का हमला ? स्थानीय/क्षेत्रीय खबर, लेकिन राष्ट्रीय पर्व के दिन दिल्ली में हमला ? अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां + राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक प्रभाव + सरकार की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल।

तीसरा, भीड़ और वीवीआईपी मौजूदगी: राष्ट्रीय समारोहों में हजारों लोग, वीवीआईपी/वीआईपी, सुरक्षा बल, मीडिया और देश-विदेश के प्रतिनिधि मौजूद होते हैं। 15 अगस्त 2026 के Red Fort समारोह के लिए भी सुरक्षा व्यवस्था बेहद व्यापक है और दिल्ली में प्रवेश, यातायात, मेट्रो तथा संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष प्रतिबंध लगाए गए हैं। आतंकी संगठनों के लिए भीड़ का अर्थ होता है कि एक छोटी कोशिश भी बड़े पैमाने पर अफरा-तफरी पैदा कर सकती है।

चौथा, लाल किला स्वयं एक असाधारण प्रतीक है: लाल किला केवल ऐतिहासिक इमारत नहीं है। 15 अगस्त को प्रधानमंत्री का तिरंगा फहराना उसे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य के सबसे शक्तिशाली प्रतीकों में बदल देता है। इसीलिए Red Fort पहले भी आतंकवादी लक्ष्य रहा है। दिसंबर 2000 में वहां आतंकी हमला हुआ था। और नवंबर 2025 का हमला इस खतरे की आधुनिक अभिव्यक्ति था। अब संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में AQIS का नाम सामने आना इस पूरे मामले को और गंभीर बनाता है।

पांचवां, दिल्ली की एक और कमजोरी—बहुत बड़ा और खुला महानगरीय क्षेत्र: यह केवल Red Fort की सुरक्षा का प्रश्न नहीं है, बल्कि दिल्ली-एनसीआर में रेलवे स्टेशन, मेट्रो नेटवर्क, बाजार, बस अड्डे, धार्मिक एवं पर्यटन स्थल, सरकारी संस्थान, भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थान और बहुत बड़ी संख्या में हैं। इसलिए किसी आतंकी संगठन के लिए केवल मुख्य समारोह को निशाना बनाना ही जरूरी नहीं होता। समारोह के आसपास किसी दूसरे संवेदनशील स्थान पर घटना करके भी भय का वातावरण बनाया जा सकता है।

जेन-कौड और विरोध प्रदर्शन की राजनीति : विपक्ष कहां पहुंचा?

देवी चेरियन

हजारों युवा भारतीयों को अपने हक के लिए न्याय मांगते हुए सड़कों पर उतरते देखने में एक गहरा भावनात्मक पहलू है। जेन-कौड के लिए कोई परीक्षा केवल एक परीक्षा भर नहीं होती। यह वर्षों की तैयारी, माता-पिता के त्याग, वित्तीय निवेश और एक बेहतर जीवन बनाने के सपने का प्रतीक होती है। यही कारण है कि नीट पेपर लीक और परीक्षा प्रणाली को लेकर उपजे आक्रोश को केवल राजनीतिक आंदोलन बताकर खारिज नहीं किया जा सकता। जब वह विश्वास डामगाता है, तो युवाओं को विरोध करने का पूरा अधिकार है। जंतर-मंतर उस आक्रोश को व्यक्त करने का स्वाभाविक स्थान बन गया। लेकिन इसी बीच एक और प्रश्न सामने आया-क्या विपक्ष ने विरोध प्रदर्शन में शामिल होकर इसके स्वरूप को बदल दिया ? जवाब और जवाबदेही की मांग को लेकर युवाओं द्वारा शुरू किया गया यह जेन-कौड विरोध प्रदर्शन अनिवार्य रूप से तब और अधिक राजनीतिक हो गया, जब विपक्षी नेता और राजनीतिक कार्यकर्ता आंदोलन में शामिल हुए।

उनकी उपस्थिति ने प्रदर्शनकारियों को अधिक दृश्यता और राजनीतिक प्रभाव भले ही दिया हो लेकिन इसने एक असहज प्रश्न भी खड़ा कर दिया-क्या युवा प्रदर्शनकारी स्वयं यही चाहते थे ? या वे केवल यह चाहते थे कि सरकार उनकी बात सुने ? यह अंतर महत्वपूर्ण है। एक बार जब राजनीतिक नेता ऐसे विरोध प्रदर्शन में शामिल हो जाते हैं, तो संदेश बदल सकता है। टैलीविजन कैमरे अब केवल छात्रों पर केंद्रित नहीं रहते। राजनीतिक भाषण हावी होने लगते हैं। नारे अधिक तीखे हो जाते हैं। सरकार रक्षात्मक मुद्रा में आ जाती है। विपक्ष को एक अवसर दिखाई देता है। मूल मुद्दा व्यापक राजनीतिक लड़ाई में दबने के जोखिम में पड़ जाता है। और यहीं पर विपक्ष को स्वयं से एक अत्यंत गंभीर प्रश्न पूछने की आवश्यकता है-क्या सार्वजनिक विरोध प्रदर्शनों के मामले में उसने अपनी जिम्मेदारी की भावना खो दी है ? विपक्षी दलों को विरोध करने का पूरा संवैधानिक अधिकार है। लेकिन प्रदर्शनकारियों के साथ खड़ेहोने और उनके विरोध प्रदर्शन पर कब्जा करने में अंतर होता है। शांतिपूर्ण मार्च आयोजित

करने और सुरक्षा बलों के साथ जानबूझकर टकराव की स्थिति पैदा करने में भी अंतर होता है। एक जिम्मेदार विपक्ष को पता होना चाहिए कि वह सीमा रेखा कहाँ है।

यहीं पर राजनीतिक नेतृत्व महत्वपूर्ण हो जाता है। एक विपक्षी नेता का काम केवल विरोध को अधिक मुखर बनाना नहीं है। इसका काम इसे अधिक जिम्मेदार बनाना है। यदि छात्र पहले से ही भावुक, आक्रोशित और हताश हैं, तो राजनेताओं को उन्हें भड़काने की बजाय शांत करना चाहिए। यदि युवा प्रदर्शनकारी किसी प्रतिबंधित क्षेत्र की ओर बढ़ रहे हैं, तो जिम्मेदार राजनीतिक नेतृत्व को उनसे कहना चाहिए-हमने अपनी बात रख दी है। हमें सुन लिया गया है। आइए हम सीमा न लांघें। इसके विपरीत, यदि राजनेता यह जानते हुए भी प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि पुलिस को हस्तक्षेप करना ही पड़ेगा, तो परिणामी टकराव लगभग अपरिहार्य हो जाता है।और तब पूरे विरोध प्रदर्शन का स्वरूप ही बदल जाता है। जो आंदोलन परीक्षा सुधार के लिए शुरू हुआ था, वह सरकार और विपक्ष के बीच का टकराव बन जाता है। छात्र पृष्ठभूमि बन जाते हैं। राजनेता सुर्खियां बन जाते हैं। जेन-कौड निश्चित रूप से यह नहीं चाहता होगा। जेन-कौड एक ऐसी पीढ़ी है जो अलग तरह से संवाद करती है। यह पारंपरिक राजनीतिक ढांचों के प्रति कम धैर्य रखती है। यह राजनीतिक दलों को लेकर अधिक संशयवादी है।

यही कारण है कि राजनीतिक दलों को सतर्क रहना चाहिए। वे सोच सकते हैं कि किसी युवा आंदोलन में शामिल होकर वे युवाओं की मदद कर रहे हैं। लेकिन युवा इसे अलग दृष्टिकोण से देख सकते हैं। वे पूछ सकते हैं-‘आप हमारे मुद्दे को अपना राजनीतिक हथियार क्यों बना रहे हैं?’ यह भारतीय राजनीति के लिए एक महत्वपूर्ण सवाल है क्योंकि जेन-कौड संभवतः किसी के राजनीतिक खेमे से जुड़ना नहीं चाहता। उसे परिणाम चाहिए। वह चाहता है कि राजनेता सवालों के जवाब दें। और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह चाहता है कि उसे गंभीरता से लिया जाए। राजनीतिक दलों से स्वतंत्र एक शांतिपूर्ण युवा आंदोलन में अपार शक्ति होती है। जिस क्षण यह राजनेताओं द्वारा नियंत्रित दिखने लगता है, सरकार इसे विपक्ष-प्रायोजित आंदोलन बताकर खारिज कर सकती है।

सिगरेट से हुक्का ज्यादा खतरनाक...

इन दिनों हर छोटे बड़े शहरों और मॉल्स में हुक्का बार या शीशा लाउंज पॉपुलर होते नजर आ रहे हैं। युवा हुक्के का एक कश नहीं बल्कि हजार कश लेते हुए दिखते हैं। बहुत से लोग मानते हैं कि हुक्का पीना सिगरेट पीने के मुकाबले बिल्कुल भी हानिकारक नहीं होता। लेकिन हुक्के से खींचा गया तंबाकू का धुआं पानी से होता हुआ एक लंबे होज पाइप के जरिए फेफड़ों तक पहुंचता है। पानी के बरतन से होते हुए आने के कारण ही यह एक आम भ्रांति है कि हुक्के का धुआं हानिकारक नहीं होता। सच यह है कि हुक्के से निकलने वाला धुआं

सिगरेट या बीड़ी के धुएं से अधिक घातक होता है। हुक्का पीना सिगरेट की ही तरह हानिकारक है क्योंकि दोनों उत्पाद के अंत में कार्सिनोजन लगा रहता है जो कि एक कैंसर पैदा करने वाला पदार्थ है। हुक्के का स्वाद बदलने के लिए केवल उसमें फ्रूट सीरप मिलाया जाता है जिससे उसके फ्लेवर में बदलाव आ जाता है। इसका यह बिल्कुल भी मतलब नहीं है कि हुक्के में किसी भी प्रकार का फल मिलाया गया हो। इसलिए यह आशा न करें कि हुक्के को पी कर आपको विटामिन मिलेगा।

उच्च रक्तचाप वाले डाइट में करें ये परिवर्तन



रक्तचाप की समस्या सबसे बेकार बीमारी है। स्वास्थ्य एक्सपर्ट का कहना है कि दुर्भाग्यवश ऐसे लोगों की संख्या देश विदेश में बढ़ रही है जिन्हें उच्च रक्तचाप है। और इसे नियंत्रण में लाने का सबसे आसान तरीका है नियमित खान पान को कारगर हो। उच्च रक्तचाप में दिल जिस वेग से खून छोड़ता है वह बढ़ जाता है। अगर समय पर इसका उपाय न किया गया तो इससे कई और बीमारियां जैसे किडनी की समस्या, धमनी की समस्या और दिल का दौरा भी पड़ सकता है। कुछ लोगों के लिए यह जेनेटिक हो सकता है। पर ज्यादातर समय यह अधिक बैठे रहने वाली जीवन शैली, तनाव और एक्ससरसाइज की कमी से शुरू होती है। आपको अपने रिश्तेदारों और दोस्तों से कई सुझाव मिल जाएंगे कि उच्च रक्तचाप के लिए क्या अच्छा होता है और क्या बुरा। इससे आप और कंप्यूज हो सकते हैं और कई बार आप गलत खाना खाकर रह जाते हैं। तो उच्च रक्तचाप के लिए सही डाइट क्या होनी चाहिए? अपनी जीवन शैली में बदलाव लाने और डाइट में बदलाव कर आप उच्च रक्तचाप से निजात पा सकते हैं। यहां पर आठ डाइट प्लान बताए गए हैं।

1. खाने में नमक की मात्रा कम कर दें- उच्च रक्तचाप के लिए ज्यादा नमक नुकसान कर सकता है। ज्यादा नमक खाने से शरीर में पानी रहता है जिससे उच्च रक्तचाप हो जाता है। इसलिए ज्यादा नमक वाला खाना जैसे केचप और डिब्बाबंद पेय पदार्थ और खाने से बचना चाहिए।

2. प्रोसेस्ड फूड न लें- प्रोसेस्ड फूड जैसे ब्रेड, प्रोसेस्ड मीट और पैक किए हुए खाने से बचना चाहिए क्योंकि यह ब्लड प्रेशर के स्तर को बढ़ाता है।

3. तेल कम खाएं- जितना हो सके कम तेल का इस्तेमाल करें। तेल में फैट ज्यादा होते हैं जिससे कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ता है जिससे ब्लड प्रेशर का स्तर भी बढ़ता है।

4. अल्कोहल से बचें- शराब में खाली कैलोरीज होते हैं। ज्यादा पीने से ना सिर्फ वजन पर ब्लड प्रेशर का स्तर भी बढ़ता है। इससे रक्त धमनियां संकुचित भी हो जाती हैं।

5. कॉफी कम पीएं- कॉफी में कैफीन होता है जो ब्लड प्रेशर के स्तर को तुरंत बढ़ा देता है। इसलिए रोज कॉफी नहीं पीनी चाहिए। हालांकि, कभी कभार आप कॉफी पी सकते हैं।

6. धूपपान न करें- सिगरेट में निकोटीन होता है जो बुरा होता है। इससे ब्लड प्रेशर बढ़ता है और धमनियां संकुचित होती हैं। उच्च रक्तचाप से बचने के लिए धूपपान से बचना जरूरी है।

7. पशु उत्पाद लेना बंद कर दें- पशु उत्पाद जैसे मीट, प्रोसेस्ड मीट, अंडा और बटर में फैट होता है। इससे कोलेस्ट्रॉल तो बढ़ता ही है, साथ ही साथ रक्तचाप भी बढ़ जाता है।

8. खाने में साबुत ग्रेन को शामिल करें- साबुत ग्रेन में प्रचुर मात्रा में फाइबर होता है। इससे कोलेस्ट्रॉल और फैट पिघल जाता है और धमनियों में जमा नहीं होता। इससे खून आराम से धमनियों में बहता है और रक्तचाप भी काबू में रहता है।



सिर्फ पुरुष ही क्यों होते हैं

गंजेपन के शिकार

आए दिन मेट्रो, बस और अपने ऑफिस में आपको कोई ना कोई पचास साल से ऊपर गंजा इंसान दिख ही जाता होगा। क्या आपने कभी नोटिस किया है कि केवल आपको गंजे पुरुष ही दिखने को मिलते हैं? गंजी महिलाएं आपने शायद ही देखी हो, और जो देखी भी होगी वे किसी न किसी बीमारी के कारण हुई होंगी।

क्या आपने कभी सोचा है कि केवल पुरुष ही क्यों गंजेपन का शिकार होते हैं? तो इसका जवाब इस लेख में जानिए। पुरुषों की तरह महिलाओं के भी बाल झड़ते हैं। जबकि महिलाएं शायद ही कभी गंजेपन की शिकार होती हैं। दुनिया में केवल इंसान ही

जिनके बाल आते हैं और केवल इंसान ही है जो गंजेपन का शिकार होता है। इंसानों में भी केवल पुरुष ही है जो गंजा होता है। कई बार माना जाता है कि बाल तनाव के कारण झड़ते हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या महिलाओं में तनाव नहीं होता?

वहीं कई बार पोषण की कमी भी बालों का झड़ना माना जाता है। अगर ऐसा है तो महिलाएं ज्यादा कुपोषित होती हैं और अच्छी से अच्छी खाते-पीती घर की महिलाओं में हीग्लोबिन की कमी होती है। ऐसे में तो फिर महिलाओं के बाल ज्यादा झड़ने चाहिए। लेकिन नहीं, बाल केवल पुरुषों के झड़ते हैं और वे ही गंजे होते हैं।



टेस्टोस्टेरॉन हार्मोन जिम्मेदार

शरीर पर बाल हार्मोनल बदलावों के कारण उगते हैं और वे झड़ते भी हार्मोंस में बदलाव के कारण ही हैं। ऐसे में बालों का आना और जाना मनोविज्ञान या रसायनविज्ञान की जगह जीवविज्ञान का विषय है। गंजेपन पर रिसर्च कर रहे नॉर्वे की बर्गेन यूनिवर्सिटी के जीव वैज्ञानिकों ने इसके लिए टेस्टोस्टेरॉन नाम के यौन हार्मोन को जिम्मेदार ठहराया है। यह पुरुषों में सावित होने वाले एंड्रोजन समूह का स्टेरॉयड हार्मोन है जिसके कारण पुरुषों में बाल झड़ने की समस्या पैदा होती है। दरअसल इंसान के शरीर में कुछ एंजाइम ऐसे होते हैं जो टेस्टोस्टेरॉन को डिहाइड्रो-टेस्टोस्टेरॉन में बदल देते हैं। यही डिहाइड्रो-टेस्टोस्टेरॉन के कारण बाल पतले और कमजोर हो जाते हैं। सामान्यतौर पर हार्मोंस में यह बदलाव करने वाले एंजाइम एक इंसान में उसे उसके जींस से प्राप्त हुए होते हैं। इसी कारण गंजेपन को आनुवांशिक भी माना जाता है।

फिर महिलाएं क्यों नहीं होती गंजी

ऐसे में सवाल वही रह जाता है कि महिलाएं क्यों नहीं पूरी तरह से गंजी होतीं? इसका जवाब टेस्टोस्टेरॉन हार्मोन में ही छुपा है। दरअसल ये एक मेल हार्मोन है जो पुरुषों में ही पाया जाता है। ये पुरुषों की तुलना में महिलाओं में नाम मात्र के लिए सावित होता है। और जब ये महिलाओं में अधिक सावित होता है तो महिलाओं में अनचाहे बालों की अधिक मात्रा में आने की समस्या पैदा होती है। इसलिए महिलाओं में टेस्टोस्टेरॉन नाममात्र के लिए सावित होते हैं और इसके साथ एस्ट्रोजन नाम के हार्मोन का भी साव होता है। जिस कारण महिलाओं के शरीर में टेस्टोस्टेरॉन के डिहाइड्रो-टेस्टोस्टेरोन बदलने की प्रक्रिया कम होती है। जिस कारण महिलाओं में बाल कम झड़ते हैं। और जब यही प्रक्रिया कभी गर्भावस्था या मेनोपॉज में बढ़ जाती है तो बाल झड़ने की समस्या उत्पन्न होती है। इसलिए अक्सर महिलाओं को गर्भावस्था और मेनोपॉज में बाल झड़ने की समस्या होती है।

शिशु को कैसे दिलाएं उकार

शिशु के जब बोटल से दूध पीता है तो उस दौरान हवा भी अन्दर पेट में चली जाती है। दूध की बोटल से शिशु के पेट में गई ये हवा उसे गैसी और चिड़चिड़ा बना देती है। उसके शरीर में अत्यधिक गैस और असुविधा से राहत देने के लिए उकार दिलवाने के लिए उनको आपकी सहायता की आवश्यकता है। उकार दिलवाने का सही तरीका क्या है और, ऐसा कब होता है जब शिशु को दूध पीने के बाद भी उकार नहीं आती।



प्रदूषण से बचाव के लिए मास्क का इस्तेमाल बेहतर

अक्सर लोग प्रदूषण और डस्ट से बचने के लिए मुंह पर स्कार्फ या रूमाल बांधते हैं। इसके पीछे हमारा उद्देश्य धूल, धूल मिट्टी आदि को अंदर जाने से रोकना होता है। इस सब के बाद हम यह मान बैठते हैं कि प्रदूषण हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता लेकिन यह हमारी गलतफहमी होती है। वैज्ञानिकों के अध्ययन मुताबिक इस तरह के कपड़े कुछ हद तक ही प्रदूषण से बचाव करते हैं, जबकि इनकी तुलना में बाजार में मिलने वाले मास्क कहीं बेहतर होते हैं। शोधकर्ता रिचर्ड पेल्टियर के अनुसार प्रदूषण से बचाव के लिए मास्क पहनने वाले लोग अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं, लेकिन चिंता इस बात की है कि यदि वे किसी डीजल ट्रक के सामने खड़े हो जाएं तो क्या वे सुरक्षित हैं। शोधकर्ताओं के दल ने नेपाल में चार प्रकार के मास्क का परीक्षण किया जिनमें कपड़े से निर्मित मास्क का प्रदर्शन बेहतर रहा और यह 80-90 फीसदी कृत्रिम कणों तथा डीजल गाड़ियों से निकलने वाले लगभग 57 फीसदी हानिकारक कणों को दूर रखने में सक्षम रहा। वहीं, मास्क के रूप में इस्तेमाल में लाया गया रूमाल या स्कार्फ 2.5 माइक्रो मीटर से कम आकार के कणों से बचाने में बेहद सीमित तौर पर लाभकारी साबित हुआ, जो बड़े कणों की तुलना में अधिक हानिकारक है, क्योंकि वे फेफड़े की गहराई तक पहुंच जाते हैं। अध्ययन यह दर्शाता है कि लोगों को यह पता होना चाहिए कि रूमाल या स्कार्फ बेहद सीमित रूप से उनका बचाव करते हैं। लेकिन बात तो यही है कि कुछ नहीं से अच्छा कुछ तो है।



भूल कर भी न मारें बच्चों के सिर पर थप्पड़

बच्चों के शरारत करने पर अक्सर माता पिता सिर पर थप्पड़ मार देते हैं। लेकिन क्या आपने सोचा है कि वह थप्पड़ आपके बच्चे पर कितना भारी पड़ सकता है। जानिए कैसे एक थप्पड़ आपके बच्चे का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आमतौर पर माता-पिता गुस्से में बच्चे सिर पर थप्पड़ लगा देते हैं। लेकिन एक शोध में इस बात का खुलासा हुआ है कि वह एक थप्पड़ आपके बच्चे के लिए बेहद हानिकारक हो सकता है। बच्चों के सिर के पीछे थप्पड़ मारने से उनमें मानसिक समस्याओं का जोखिम बढ़ता है। यही नहीं संज्ञानात्मक क्षमताओं (कॉग्नेटिव एबिलिटी) भी कम होती है। 50 साल के लंबे शोध से पता चला है कि बच्चे के सिर पर थप्पड़ मारने से उसके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। इस दौरान उन्होंने करीब 1,60,000 बच्चों के जीवन का आंकलन किया। माता-पिता अक्सर ये सोचते हैं कि थप्पड़ मारने से उनके बच्चे सुधर जाएंगे, ये धारणा बिल्कुल गलत है क्योंकि इस तरह का व्यवहार बच्चों को लंबे समय तक नहीं सुधार सकता है।



जिन्हें अपनों ने ठुकराया, रवि बापटले ने उन्हें दिया ‘हैप्पी इंडियन व्हिलेज’ का सम्मान

एचआईवी से प्रभावित लोगों के लिए लातूर के पास बसाया सम्मान और उम्मीद का अनूठा संसार

महाराष्ट्र के लातूर के पास एक बहुत ही खूबसूरत गांव है हैप्पी इंडियन व्हिलेज। यह देश के दूसरे गांवों की तरह कोई आम गांव नहीं है, बल्कि एक ऐसा स्थान है, जहां सिर्फ और सिर्फ एचआईवी संक्रमित और प्रभावित लोग रहते हैं। ये वे लोग हैं, जिन्हें कई बार उनके अपने लोगों ने ही ठुकारा दिया, लेकिन रवि बापटले जी के लिए यही लोग आज उनकी पूरी दुनिया बन चुके हैं। जहां एचआईवी से प्रभावित लोगों को समाज के कुछ लोग आज भी अछूतों की तरह देखते हैं, वहीं रवि बापटले ने उन्हें सम्मानजनक जीवन देने के उद्देश्य से इस स्थान को ‘हैप्पी इंडियन व्हिलेज’ का नाम दिया है। यहां रहने वाले लोगों को केवल आशय ही नहीं, बल्कि प्यार, सम्मान, शिक्षा और एक बेहतर भविष्य की उम्मीद भी मिलती है।

एक बच्चे की पीड़ा ने बदल दी जीवन की दिशा
लातूर के पास उदगीर तालुका के धोंडिहिप्परागा गांव में जन्मे रवि बापटले की यह यात्रा भी उतनी ही चुनौतीपूर्ण रही है, जितना किसी एचआईवी पीड़ित व्यक्ति का जीवन। वर्ष 2006 में उन्होंने अपने ही गांव में एक एचआईवी पीड़ित बच्चे को अंतिम समय में उचित संस्कार भी न मिलते हुए देखा। उस घटना ने उनके मन को झकझोर दिया और तभी उन्होंने समाज से ठुकारे गए इन लोगों के लिए कुछ करने की ठान ली।

उस समय पेशे से एक मराठी अखबार के पत्रकार और प्रोफेसर रहे रवि ने इस कार्य के लिए न केवल अपनी नौकरी छोड़ी, बल्कि अपने माता-पिता को यह भी बता दिया कि वह शादी नहीं करेंगे, ताकि अपना पूरा जीवन इन पीड़ितों की सेवा के लिए समर्पित कर सकें। उनके कार्य के बारे में जानकर उनके एक मित्र के रिश्तेदार ने उन्हें लातूर से लगभग 15 किलोमीटर दूर छह एकड़ जमीन दान में दी।

झोपड़ियां तोड़ी गईं, बिजली-पानी देने से भी किया गया इनकार
लेकिन चुनौतियां अभी शुरू ही हुई थीं। गांव वालों ने रवि बापटले



को समाज से बहिष्कृत कर दिया। दूसरी ओर उनके पास पर्याप्त धन भी नहीं था, इसलिए उन्होंने स्कूलों और कॉलेजों में जाकर लोगों से आर्थिक सहयोग मांगना शुरू किया। वर्ष 2007 में जब उन्होंने दान में प्राप्त जमीन पर झोपड़ियां बनाने का कार्य शुरू किया, तो कुछ लोगों ने उनकी झोपड़ियां तोड़ दीं। गांव के सरपंच ने बिजली और पानी का कनेक्शन देने से भी मना कर दिया। लोगों को उनके इस कार्य से इस हद तक आपत्ति थी कि कुछ लोगों ने उनके विरोध में आंदोलन तक किया।

एक के बाद एक बाधाओं के बावजूद रवि बापटले ने हार नहीं मानी और अपने मिशन को लगातार जारी रखा। शुरुआत में उनके पास चार-पांच बच्चे थे, जिन्हें सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिलाने में उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आखिरकार रवि ने कहा कि यदि उनके बच्चों की वजह से स्कूल के किसी बच्चे को

कुछ भी होता है, तो उन्हें सरेआम फांसी पर लटका दिया जाए। ऐसे विकट समय में उनके बड़े भाई और कुछ मित्रों ने उन्हें विशेष सहयोग दिया।

संघर्ष से सफलता तक, बच्चों को मिला शिक्षा और सम्मान का अधिकार

आखिरकार उनके प्रयासों को बल मिला और आज सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इनमें से कुछ बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर अच्छी नौकरियां भी करने लगे हैं।

आज इस सेवालय हैप्पी इंडियन व्हिलेज में लगभग 110 लोग रह रहे हैं और अब तक लगभग 300 लोग यहां से निकलकर अपना जीवन आगे बढ़ा चुके हैं। इनमें 35 लड़कियों की शादी भी रवि बापटले ने कराई है।

रवि बताते हैं कि जिन लड़कियों की शาดियां हुई हैं, उन्हें

गर्भावस्था के दौरान उचित उपचार दिए जाने के कारण उनके बच्चे एचआईवी से मुक्त हैं और संक्रमण का कोई खतरा नहीं है। इतना ही नहीं, यहां से विवाह के बाद गई कई महिलाएं प्रसव के लिए अपने एकमात्र हैप्पी इंडियन व्हिलेज में ही आना पसंद करती हैं।

सेवा कार्यों की गूंज पहुंची देशभर तक
आज इस सेवालय के सेवा कार्यों की गूंज हर जगह सुनाई देती है। मराठी कौन बनेगा करोड़पति से लेकर हिंदी कौन बनेगा करोड़पति तक रवि बापटले को आमंत्रित किया गया है और उन्हें सहायता राशि भी प्रदान की गई है।

भजन गायिका एवं पद्मश्री सम्मान से सम्मानित अनुराधा पौडवाल ने भी यहां दस कर्मरे बनवाए हैं। महाराष्ट्र के राज्यपाल रह चुके भगतसिंह कोश्यारी जी ने इन बच्चों की सहायता के लिए दस लाख रुपये की सहायता राशि दी है।

बस एक ही कोशिश इन बच्चों को भी मिले प्यार और सम्मान
रवि बापटले की कोशिश केवल इतनी है कि आज के इस आधुनिक युग में इन बच्चों को भी वही प्यार, सम्मान और अपनान मिले, जिसके वे हकदार हैं, क्योंकि इसमें इन बच्चों का कोई दोष नहीं है।हालांकि रवि बापटले सेना में जाकर देश सेवा तो नहीं कर सके, लेकिन समाज में अवांछित मान लिए गए इस वर्ग को अपनाने और उन्हें सम्मानजनक जीवन देने के लिए वे पूरी तरह समर्पित हैं। उनका जीवन संदेश देता है कि सच्ची सेवा केवल शब्दों से नहीं, बल्कि उन लोगों का हाथ थामने से होती है, जिन्हें दुनिया ने अकेला छोड़ दिया हो।



-स्वाती जैन, हैदराबाद

पेपर लीक की राजधानी बन रहा बिहार



पटना। बिहार में परीक्षाओं के पेपर लीक होने और छात्रों पर पुलिस कार्रवाई को लेकर राष्ट्रीय जनता दल के नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने राज्य सरकार पर हमला बोला है. उन्होंने सरकार पर सवाल उठाते हुए 19 अगस्त को राजभवन तक विरोध मार्च निकालने का ऐलान किया है. तेजस्वी यादव ने राज्य की शिक्षा व्यवस्था और चयन प्रक्रियाओं पर चिंता जताते हुए कहा, बिहार एग्जाम पेपर लीक की राजधानी बनता जा रहा है. यहां लॉ एंड ऑर्डर पूरी तरह से खत्म हो गया है. जब स्टूडेंट्स पेपर लीक के खिलाफ प्रोटेस्ट करते हैं, तो उन्हें पीटा जाता है और लाठीचार्ज किया जाता है, उन्होंने दावा किया कि राज्य में प्रोटेस्ट कर रहे स्टूडेंट्स के खिलाफ AK-47 राइफल का भी इस्तेमाल किया जाता है. यहां कोई ऐसी परीक्षा या फिर कोई ऐसी बहाली नहीं होती है जब पेपर लीक न होता.तेजस्वी यादव ने कहा, चाहे 10वीं की परीक्षा हो, 12वीं की परीक्षा या फिर कोई बहाली की परीक्षा हो, हर बार पेपर लीक हो जा रहा है।

किसानों के दिल्ली कूच पर ब्रेक!

नईदिल्ली। किसान आंदोलन को लेकर किसान नेता जगजीत सिंह डब्लेवाल ने एक बड़ा ऐलान किया है. उन्होंने हरियाणा प्रशासन के साथ हुई बातचीत का ब्योरा देते हुए बताया है कि किसान फिलहाल खनौरी बॉर्डर पर ही डटे रहेंगे. दरअसल किसानों ने पहले 28 अगस्त तक दिल्ली पहुंचने का ऐलान किया था. हालांकि, अब उन्होंने खनौरी बॉर्डर पर ही अपना मोर्चा जारी रखने का फैसला किया है. डब्लेवाल ने बताया कि किसान अपने घरों से 28 अगस्त तक की पूरी तैयारी करके आए हैं, इसलिए अब यहीं लगातार मोर्चा लगाया जाएगा. किसानों ने ये भी कहा है कि वो सड़क जाम नहीं करेंगे, बल्कि एक तरफ बैठकर शांतिपूर्वक अपना विरोध जारी रखेंगे. किसान नेताओं का कहना है कि भारत और अमेरिका के बीच होने वाली संभावित ट्रेड डीलको रद्द करवाना उनका असल मकसद है. किसान इस मुद्दे पर केंद्र सरकार से सीधी बातचीत करना चाहते हैं. डब्लेवाल ने कहा कि अगर कृषि मंत्रालय से जुड़े केंद्र के अधिकारी या मंत्री बातचीत के लिए आगे आते हैं, तो किसान उनके साथ बैठक करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

सीजेआई और बीसीआई चेयरमैन का किया विरोध

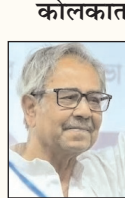
नई दिल्ली। नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी के छात्रों और पूर्व छात्रों ने सीजेआई सूर्यकांत और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा के दीक्षांत समारोह में शामिल होने का विरोध किया है. 15 अगस्त को बयान जारी करते हुए उन्होंने बार काउंसिल ऑफ इंडिया केनालसर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद के छात्रों के दाखिले पर रोक लगाने के फैसले की आलोचना की. हालांकि बार काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा अब इस फैसले को वापस लिया जा चुका है. लेकिन नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी के छात्रों और पूर्व छात्रों ने नालसर के छात्रों का समर्थन किया है. इस बयान में आगे कहा गया है कि भले ही बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने नालसर के खिलाफ कार्रवाई को रोक कर फैसले को वापस ले लिया हो लेकिन किसी वैधानिक संस्था के छात्रों और शिक्षकों के खिलाफ इस तरह कार्रवाई शुरू करना कई सवाल खड़े करता है।

विमल के एेड पर फंसे शाहरुख, अजय और टाइगर



नईदिल्ली। बॉलीवुड एक्टर शाहरुख खान, अजय देवगन और टाइगर श्राफ पर विमल इलायची का एेड करना भारी पड़ गया है. महाराष्ट्र फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने विमल इलायची के विज्ञापन मामले में तीनों एक्टर्स को कारण बताओनोटिस भेजा है. एफडीए का कहना है कि यह एेड राज्य में बैन विमल पान मसाला का सरोगेट विज्ञापन है. तीनों एक्टर्स को 15 दिन में जवाब देना है. एफडीए ने नोटिस में तीनों स्टार्स से सबूत पेश करने को कहा है कि विमल इलायची वाकई में एक अलग प्रोडक्ट है, जो मार्केट में बिकता है या फिर यह बैन हुए विमल पान मसाला और तंबाकू उत्पादों को प्रमोट करने के लिए बनाया गया महज एक सरोगेट या ब्रांड-एक्सटेंशन एड है. एफडीए ने तीनों स्टार्स से उन सभी टीवी चैनलों, डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस की जानकारी मांगी है, जहां यह एेड टेलीकास्ट या पब्लिश हुआ. साथ ही इसके एयरटाइम का पीरियड भी बताने को कहा गया है।

पूर्व डिप्टी स्पीकर का शव टीएमसी दफ्तर में मिला



कोलकाता। पश्चिम बंगाल विधानसभा के पूर्व डिप्टी स्पीकर और पांच बार के तृणमूल कांग्रेस विधायक आशीष बनर्जी का शव रविवार सुबह बोरभूम जिले के रामपुरहाट में उनके आवास से सटे टीएमसी कार्यालय के अंदर फंदे से लटका मिला. घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया. मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने घटना के कारणों का पता लगाने के लिए आधिकारिक जांच शुरू कर दी है. पुलिस सूत्रों का कहना है कि शव के पास से एक सुसाइड नोट भी बरामद हुआ है. आशीष बनर्जी को ममता बनर्जी का करीबी माना जाता था.। शव रामपुरहाट स्थित उनके आवास के बिल्कुल पास बने टीएमसी कार्यालय में फंदे से लटका मिला. उसके पास से एक सुसाइड नोट भी मिला है. हालाँकि, सुसाइट नोट में क्या लिखा है इस बारे में अभी कोई जानकारी नहीं मिली है. पुलिस की टीम में मामले से जुड़े सभी पहलुओं की गहन जांच में जुट गई हैं.आशीष बनर्जी तृणमूल कांग्रेस के एक प्रमुख चेहरों में से एक थे।

नितिन नवीन की नई टीम घोषित

स्मृति ईरानी महामंत्री, वसुंधरा राजे सिंधिया राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने सोमवार को पार्टी के नए राष्ट्रीय पदाधिकारियों के नामों का एलान कर दिया। पार्टी की ओर से जारी सूची के मुताबिक, नई टीम में कई वरिष्ठ नेताओं को अहम जिम्मेदारियां दी गई हैं। नियुक्तियां तत्काल प्रभाव से लागू होंगी। नई टीम में राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया समेत 13 नेताओं को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है। वहीं स्मृति ईरानी और विनोद तावड़े को राष्ट्रीय महामंत्री की जिम्मेदारी दी गई है।

भाजपा की ओर से जारी सूची के अनुसार, वसुंधरा राजे सिंधिया, तीरथ सिंह रावत, राम माधव, बैजयंत जय पांडा, डी. पुरंदेश्वरी, रेखा वर्मा, वर्षाबिन नरेंद्रभाई दोशी, डॉ. भारती प्रवीण पवार, सरदार मनप्रीत सिंह बादल, लाल सिंह आर्य, प्रो. एम. नागराजा, प्रो. तारिक मंसूर और डॉ. मधुचंद्र कर को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है। इस सूची में अलग-अलग राज्यों के नेताओं को जगह दी गई है, जिससे संगठन में क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व का भी ध्यान रखा गया है।

नई टीम में स्मृति ईरानी और विनोद तावड़े को राष्ट्रीय महामंत्री बनाया गया है। दोनों नेताओं को संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। पार्टी की जारी सूची में बीएल संतोष को राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) के पद पर बरकरार रखा गया है। वहीं शिवप्रकाश और सौदान सिंह को राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री (संगठन) की जिम्मेदारी दी गई है।

पीपूष गोयल को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष और राजेश मंगल को राष्ट्रीय संयुक्त कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पार्टी ने अपने संगठन और आउटरीच विंग में भी नियुक्तियों की घोषणा की है। संवित पात्रा को नॉर्थ-ईस्ट कोऑर्डिनेटर बनाया गया है, जबकि वरुण चोपड़ा को सेंट्रल ऑफिस का इंचार्ज नियुक्त किया गया है।

नई राष्ट्रीय टीम में महिला नेताओं की भी अच्छी भागीदारी दिखाई देती है। वसुंधरा राजे सिंधिया, डी. पुरंदेश्वरी, रेखा वर्मा, वर्षाबिन नरेंद्रभाई दोशी, डॉ. भारती



प्रवीण पवार और डॉ. मधुचंद्र कर को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं स्मृति ईरानी को राष्ट्रीय महामंत्री बनाया गया है। इस तरह पार्टी को नई संगठनात्मक टीम में कई महिला नेताओं को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय जिम्मेदारियां मिली हैं।

भाजपा की नई सूची में राजस्थान, उत्तराखंड, दिल्ली, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल समेत कई राज्यों के नेताओं को शामिल किया गया है। पार्टी के केंद्रीय संगठन में अलग-अलग राज्यों के नेताओं को जिम्मेदारी दिए जाने से राष्ट्रीय स्तर पर संगठन के विस्तार और समन्वय को मजबूत करने का संकेत मिलता है।

भाजपा की नई टीम में किसे कौन सी

जिम्मेदारी मिली?

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष: वसुंधरा राजे सिंधिया, तीरथ सिंह रावत, राम माधव, बैजयंत जय पांडा, डी. पुरंदेश्वरी, रेखा वर्मा, वर्षाबिन नरेंद्रभाई दोशी, डॉ. भारती प्रवीण पवार, सरदार मनप्रीत सिंह बादल, लाल सिंह आर्य, प्रो. एम. नागराजा, प्रो. तारिक मंसूर और डॉ. मधुचंद्र कर।

राष्ट्रीय महामंत्री: विनोद तावड़े और स्मृति ईरानी।

राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन): बीएल संतोष।

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री (संगठन): शिवप्रकाश और सौदान सिंह।

सैंसेक्स 281 अंक गिरा निफ्टी 24,287 पर बंद

नईदिल्ली। आईटी सेक्टर में तेज बिकवाली के चलते घरेलू बाजारों में गिरावट जारी है। कारोबारी हफ्ते के पहले दिन भारतीय बाजारों में बेंचमार्क इंडेक्स लाल निशान में बंद हुए। बीएसई सेंसेक्स 281 अंक गिरकर 77,728 पर बंद हुआ, जो कारोबारी सेशन में 77,453 तक भी फिसला था। एनएसई निफ्टी भी 78 अंक टूटकर 24,287 पर बंद हुआ है। इंडेक्स इंट्राडे में 24,226 तक भी टूटा था। आईटी शेयरों में सोमवार (17 अगस्त) को तेज बिकवाली दर्ज की गई। निफ्टी आईटी इंडेक्स 1.75 फीसदी गिरकर बंद हुआ। निफ्टी 50 में इंप्रोसिस, एचसीएल टेक, टीसीएस जैसे हैवीवेट्स 2-2 फीसदी से ज्यादा की गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि हिंडालको और टाटा स्टील 1.4 से 2 फीसदी ऊपर बंद हुए। आईटी के अलावा एफएमसीजी और फार्मा शेयरों में भी तेज बिकवाली रही।

382 करोड़ में बिकी फेरारी की पहली इलेक्ट्रिक कार

नईदिल्ली। दुनिया की सबसे लोकप्रिय रेसिंग करें ब्राने वाली कंपनी- फेरारी की सबसे पहली इलेक्ट्रिक कार अमेरिका में चार करोड़ डॉलर में बिकी है। भारतीय मुद्रा में यह 382 करोड़ रुपये के बराबर की राशि है। इस कार को एक नीलामी के जरिए बेचा गया। बताया गया है कि इस कार की बिक्री अपनी असल कीमत से 35 गुना ज्यादा दाम पर हुई है। फेरारी की इस पहली इलेक्ट्रिक कार की नीलामी करने वाली संस्था सोदेबी ने बताया कि जुटाई गई राशि को फेरारी फाउंडेशन के शैक्षिक कार्यक्रम में लगाया जाएगा। नीलामी करने वालों ने यह खुलासा नहीं किया कि फेरारी के इस मॉडल का खरीदार कौन है। हालांकि, कुछ अन्य रिपोट्स में रजिस्ट्री के हवाले से कार के खरीदारों के नाम कथित तौर पर सामने आए हैं। इटैलियन मूल की कंपनी फेरारी ने इसे फेरारी लुचे नाम दिया है।

बैंकिंग सेक्टर में बड़े सुधार की केंद्र सरकार की तैयारी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार बैंकिंग सेक्टर में अगले दौर के सुधारों की तैयारी कर रही है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि सरकार जल्द ही हार्ड-पावर्ड कमेटी का गठन करेगी, जो 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने में बैंकिंग सेक्टर की भूमिका का आकलन करेगी। नई दिल्ली में आयोजित पब्लिक सेक्टर बैंक्स कॉन्क्लेव 2026 को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री ने बैंकिंग सेक्टर के वरिष्ठ अधिकारियों और बैंकर्स से सुधारों को लेकर अपने सुझाव और सिफारिशें देने की अपील की। उन्होंने कहा कि दो दिवसीय कॉन्क्लेव में सामने आने वाले सुझावों और निष्कर्षों को प्रस्तावित कमेटी के सामने रखा जाएगा। निर्मला सीतारमण ने कहा कि प्रस्तावित कमेटी कॉन्क्लेव से सामने आने वाली सिफारिशों पर विचार करेगी और अपनी रिपोर्ट में आगे के सुधारों को लेकर सुझाव देगी।

100 करोड़ रुपये से अधिक आय वाले करदाता 576 हुए

नई दिल्ली। भारत में उच्च आय वर्ग के करदाताओं की संख्या में तेजी से वृद्धि दर्ज की जा रही है। एसबीआई रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार, आकलन वर्ष 2026 में 100 करोड़ रुपये या उससे अधिक वार्षिक वार्षिक आय घोषित करने वाले करदाताओं की संख्या 39 फीसदी बढ़कर 576 हो गई है। एक वर्ष पहले आकलन वर्ष 2025 में यह संख्या 415 थी। यह वृद्धि देश में बढ़ती आय, व्यावसायिक विस्तार और आर्थिक गतिविधियों में तेजी का स्पष्ट संकेत है। रिपोर्ट बताती है कि केवल अति-उच्च आय वर्ग ही नहीं, बल्कि 1 करोड़ रुपये या उससे अधिक आय दिखाने वाले करदाताओं की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। आकलन वर्ष 2026 में इस श्रेणी के करदाताओं की संख्या बढ़कर 5,35,672 हो गई।

स्टेल प्रमुख समाचार

गिल ने हवा में गोता लगाकर एक हाथ से लपका शानदार कैच

गॉल। श्रीलंका के गॉल में खेले जा रहे भारत बनाम श्रीलंका के टेस्ट मैच के दौरान कैप्टन शुभमन गिल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर छाया हुआ है। गिल ने शानदार फील्डिंग करते हुए श्रीलंका के कामिंदु मोंडिस को आउट किया। शुभमन गिल ने फील्डिंग में एक नया कारनामा करते हुए अविश्वसी कैच पकड़ा जिसे देखकर मैदान के अंदर और बाहर बैठे फैन सभी हैरान हो गए। शुभमन ने पूरी तरह डाइव लगाई और जमीन से कुछ इंच ऊपर ही शानदार फॉर्म में चल रहे मोंडिस का कैच लपक लिया।

मोंडिस, जिन्होंने 25 गेंदों पर 14 रन बनाए थे, पिच पर आगे बढ़े और कुलदीप की गेंद को पुश-ड्राइव करने की कोशिश में उसे फुल लेंथ गेंद में बदल दिया। शॉट बल्ले से थोड़ा हवा में उठा और ऐसा लगा कि यह फील्डर्स के सामने सुरक्षित रूप से गिर जाएगा। एक्स्ट्रा कवर पर तैनात भारतीय कप्तान ने अपनी बाई और पूरी लंबाई में छलांग लगाई और हवा में नीचे आ रही गेंद को अपने बाएं हाथ से लपक लिया।

यह कैच इसलिए भी मुश्किल था क्योंकि गेंद तेज़ी से नीचे आ रही थी, लेकिन ज़मीन पर गिरने के बावजूद गिल ने गेंद को थामे रखा। भारतीय कप्तान ने तुरंत गेंद को हाथ में उछालकर ज़रन मनाया और खुशी में अपने हवा ऊपर उठाकर हवा में मुक्का मारा, जबकि श्रीलंकाई प्रशंसक हैरान होकर यह सब देखते रह गए। इस कैच का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। सोमवार को श्रीलंका के खिलाफ पहले टेस्ट के तीसरे दिन भारत अपनी पहली पारी में 462 रन पर ऑलआउट हो गया। भारत के लिए देवदत्त पंडिकल ने सबसे ज्यादा 167 रन बनाए, जिनकी पारी रविवार को समाप्त हुई थी। नौ विकेट पर 460 रन से अपनी पारी को आगे बढ़ाते हुए, भारत आखिरी विकेट गिरने से पहले केवल दो रन ही और जोड़ सका।

समर सैद और बेनौट फॉकोन

फारस की खाड़ी के ऊर्जा उत्पादक देश इस निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं कि होर्मुज जलडमरूमध्य पर ईरान का नियंत्रण स्थायी हो जाएगा, जिससे उनके तेल और गैस निर्यात तथा वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति में अनिश्चितकाल के लिए बाधा उत्पन्न होगी। समस्या यह है कि उन्हें डर है कि इसका दूसरा विकल्प-युद्ध की ओर वापस जाना-और भी बदतर होगा। यह असमंजस इस बात को उजागर करता है कि कैसे युद्ध ने ईरान को और अधिक आक्रामक बना दिया है तथा दुनिया की ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण इस क्षेत्र के पास इसका मुकाबला करने का कोई बेहतर विकल्प नहीं छोड़ा है।

खाड़ी में ईरान के प्रतिद्वंद्वी इस समय विचाराधीन उस समझौते को पसंद नहीं करते, जो इस महत्वपूर्ण जलमार्ग को खोलने के लिए आने वाले जहाजों पर ईरानी निगरानी

को औपचारिक रूप देता है। लेकिन खाड़ी के अधिकारियों का मानना है कि अमरीका और ईरान के बीच आगे होने वाली सैन्य कार्रवाई, जो अरब देशों के ऊर्जा बुनियादी ढांचे को खतरे में डाल देगी, की तुलना में यह समझौता बेहतर है। होर्मुज के माध्यम से ऊर्जा शिपमेंट को फिर से शुरू करने का वादा करने वाले इस समझौते पर बातचीत हाल के दिनों में रुक गई है। ईरान ने वित्तीय राहत और जलडमरूमध्य में अमरीकी व इस्राइली युद्धपोतों पर प्रतिबंध की मांग की है, जबकि दूसरी ओर अमरीका ऐसे किसी समझौते पर विचार करने से इंकार कर रहा है जो तेहरान को शिपिंग में बाधा डालने को अनुमति देता हो।

संयुक्त अरब अमीरात (यू.ए.ई.) ने कहा कि पिछले सप्ताह जलडमरूमध्य को पार करने का प्रयास करते समय उसके 4 जहाजों को ईरानी हमलों का निशाना बनाया गया।



सऊदी अरब, जिसने लाल सागर पर स्थित एक बंदरगाह तक रेगिस्तान के पार तेल पाइपलाइन से भेजकर अपनी अधिकांश निर्यात क्षमता को सुरक्षित रखा था, उसने देखा कि यह वैकल्पिक निर्यात मार्ग भी यमन में ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के हमले की जड़ में आ गया है। दामिएटा बंदरगाह पर एक गैस टैंकर पर झोन हमले के साथ मिस्र भी इस आग की चपेट में आ गया, जिससे पता चलता है कि ऊर्जा निर्यात के लिए ईरान का खतरा होर्मुज से भी परे तक फैला हुआ है। होर्मुज जलडमरूमध्य के माध्यम से कच्चे तेल का निर्यात पिछले सप्ताह गिरकर लगभग

2.2 मिलियन बैरल प्रतिदिन रह गया, जो कि एक महीने पहले लगभग 8.5 मिलियन बैरल प्रतिदिन था। ईरानी निर्यात एक सप्ताह के समय में घटकर आधा रह गया, जो पिछले सप्ताह 47,000 बैरल प्रतिदिन तक आ गया। संघर्ष से पहले इस जलमार्ग से प्रतिदिनलगभग 20 मिलियन बैरल तेल और पेट्रोलियम उत्पाद गुजरते थे। ईरान का शीर्ष नेतृत्व अब जलडमरूमध्य को फिर से खोलने के समझौते पर विचार कर रहा है लेकिन अधिकारी कड़े सौदेबाजी का संकेत दे रहे हैं। ईरानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल सहित आक्रामक कार्रवाइयां नहीं रोकता और उसकी भरपाई नहीं करता, तब तक रणनीतिक जलमार्ग नहीं खोला जाएगा। ऐसी भाषा ईरान के परमाणु कार्यक्रम जैसे अधिक कठिन सवालों पर पहुंचने से पहले न्यूनतम

समझौतों के लिए भी बाधाओं की ओर इशारा करती है। खाड़ी के अधिकारी इस संभावना के प्रति आशंकित हैं कि ईरान के साथ कोई भी समझौता उसके मिसाइल कार्यक्रम और क्षेत्र भर में सहयोगी मिलिशिया के समर्थन को बरकरार रखेगा, जो उनकी सुरक्षा के लिए मुख्य खतरा हैं। युद्ध खिंचने के साथ-साथ खाड़ी के अधिकारी अमरीका की ओर से स्पष्ट रणनीति की कमी के रूप में देखे जाने वाले रव्ये से तेजी से निराश हो रहे हैं, जिससे उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा और अर्थव्यवस्थाएं खतरे में पड़ रही हैं। खाड़ी देश पहले से ही लाल सागर और ओमान की खाड़ी तक पाइपलाइनों का विस्तार करने के साथ-साथ भंडारण सुविधाओं में निवेश बढ़ाने के लिए होर्मुज को बाइपास करने की विभिन्न योजनाओं पर विचार कर रहे हैं, ताकि वे शांत अवधि के दौरान अधिक तेल शिप कर सकें और इसे विदेशों में जमा कर सकें।



श्री नरेंद्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

वनोपज की ताकत आत्मनिर्भरता की नई राह पर छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़, जिसे हर्बल स्टेट के रूप में जाना जाता है, आज अपनी समृद्ध वन संपदा और दूरदर्शी शासकीय नीतियों के बल पर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दे रहा है। यहां के वनों से प्राप्त होने वाले बहुमूल्य वनोपज अब केवल स्थानीय उपयोग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक बाजारों में अपनी चमक बिखेर रहे हैं। छत्तीसगढ़ की यह पहल न केवल वनों का संरक्षण कर रही है, बल्कि ग्रामीण समाज में स्वावलंबन, आत्मविश्वास और आर्थिक सुरक्षा की एक नई चेतना का संचार कर रही है।



श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

बहुमूल्य वनोपज छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था की ताकत

छत्तीसगढ़ राज्य वनोपज से आय के मामले में देश में पहले स्थान पर है। तेंदूपत्ता से वनवासियों को यहां बड़ी आय होती है, इसलिए इसे 'हरा सोना' कहा जाता है। लाख, शहद और दुर्लभ औषधीय पौधों के साथ-साथ सागौन, साल, बीजा और शीशम जैसे कीमती वृक्ष यहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। आधुनिक प्रसंस्करण के माध्यम से इन कच्चे माल को उच्च मूल्य के उत्पादों में बदला जा रहा है।



छत्तीसगढ़ हर्बल्स स्थानीय से वैश्विक तक

- ✓ राज्य सरकार का यह ब्रांड शुद्धता और प्राकृतिक उत्पादों का पर्याय बन चुका है।
- ✓ संजीवनी स्टोर्स की संख्या 30 से बढ़कर अब 1,500 से अधिक हो गई है।
- ✓ **ई-कॉमर्स** : अब ये उत्पाद अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसे प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध हैं।
- ✓ **प्रमुख उत्पाद** : भृंगराज तेल, नीम तेल, च्यवनप्राश, शुद्ध शहद, महुआ उत्पाद, बेल शर्बत और विभिन्न आयुर्वेदिक चूर्ण।



केन्द्रीय प्रसंस्करण इकाई जामगांव एम : ग्रामीण अर्थव्यवस्था और रोजगार को नया बल

केन्द्रीय प्रसंस्करण इकाई (CPU) ग्रामीण रोजगार में वनोपज और औषधीय पौधों के संग्रह, प्रसंस्करण और मूल्य-वर्धन (value addition) के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था और ग्रामीणों, खासकर महिलाओं, के लिए आय और रोजगार के नए अवसर पैदा करती है। दुर्ग जिला के पाटन विकासखंड के जामगांव एम में स्थापित केन्द्रीय प्रसंस्करण इकाई ग्रामीण रोजगार, वनोपज प्रसंस्करण और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

'छत्तीसगढ़ हर्बल ब्रांड' के नाम से बाजार में उपलब्ध

यह इकाई लगभग 111 एकड़ क्षेत्र में विकसित की गई है, जहाँ छत्तीसगढ़ शासन और राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित के माध्यम से वन क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीणों से वनोपज और औषधीय पौधों का क्रय, संग्रहण और प्रसंस्करण किया जा रहा है। यहाँ तैयार किए जा रहे हर्बल उत्पाद 'छत्तीसगढ़ हर्बल ब्रांड' के नाम से बाजार में उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग स्वास्थ्य लाभ के लिए किया जाता है।



प्रसंस्करण इकाई से मिल रहा स्थानीय लोगों को रोजगार

प्रसंस्करण इकाई क्रमांक- 01 में स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित किए गए हैं। यहाँ आंवला, बेल और जामुन से जूस, कैन्डी, लच्छा, मुरब्बा, शरबत, पल्प और आर्टीएस पेय जैसे शुद्ध हर्बल उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। इन उत्पादों का विक्रय एनडबल्यूएफपी मार्ट और संजीवनी स्टोर के माध्यम से किया जाता है। इस इकाई ने मात्र एक वर्ष में लगभग 44 लाख रुपये मूल्य के उत्पादों का निर्माण और विक्रय कर स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने में अहम योगदान दिया है।



20 हजार मीट्रिक टन क्षमता का केन्द्रीय वेयरहाउस

इकाई क्रमांक- 02 में चार बड़े गोदाम बनाए गए हैं, जिनकी कुल भंडारण क्षमता 20,000 मीट्रिक टन है। वर्तमान में कोदो, कुटकी, रागी, हरा कचरिया, चिरायता, कालमेघ, पलास फूल और साल बीज सहित विभिन्न वनोपज का संग्रह किया गया है। इन उत्पादों का विक्रय संघ मुख्यालय रायपुर द्वारा निविदा प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। इन दोनों इकाइयों के संचालन से हजारों लोगों के लिए रोजगार सृजित हो चुका है।



पीपीपी मॉडल पर हर्बल एक्सट्रैक्शन यूनिट की स्थापना

जामगांव एम में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के तहत हर्बल एक्सट्रैक्शन यूनिट की स्थापना की गई है। यह यूनिट छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ और सगर बायोटेक कंपनी के संयुक्त प्रयास से बनी है, जिसका लोकार्पण वर्ष 2025 में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और वन मंत्री श्री केदार कश्यप द्वारा किया गया था। लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में बनी इस यूनिट में गिलोय, कालमेघ, बेहदा, सफेद मुसली, जंगली हल्दी, गुडमार, अश्वगंधा और शतावरी जैसे औषधीय पौधों से अर्क निकाला जा रहा है। इन अर्कों का उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं और वेलेनेस उत्पादों के निर्माण में किया जाता है।

छत्तीसगढ़ के
वनों से आत्मनिर्भर
ग्रामीण समाज
सशक्त अर्थव्यवस्था
स्वस्थ भारत
समृद्ध छत्तीसगढ़

ग्रामीणों और संग्राहकों को स्थायी लाभ

हर्बल एक्सट्रैक्शन यूनिट के माध्यम से ग्रामीण संग्राहकों से वनोपज और औषधीय पौधों का पूर्ण क्रय सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे उन्हें उचित मूल्य और नियमित आय मिल रही है। इससे वन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है और नए रोजगार अवसर भी सृजित हो रहे हैं। जामगांव एम की केन्द्रीय प्रसंस्करण इकाई, वेयरहाउस और हर्बल एक्सट्रैक्शन यूनिट वनोपज की मूल्यवृद्धि के साथ-साथ ग्रामीणों और संग्राहकों के लिए आजीविका के मजबूत साधन बन रहे हैं।

वनो का संरक्षण, वनोपज का संवर्द्धन – छत्तीसगढ़ की प्रगति का संकल्प